ISSN 2394-8485

मासिक

# गुरमत ज्ञान

३/-

आषाढ़-सावन संवत् नानकशाही ५५७ जुलाई 2025 वर्ष १८ अंक ११

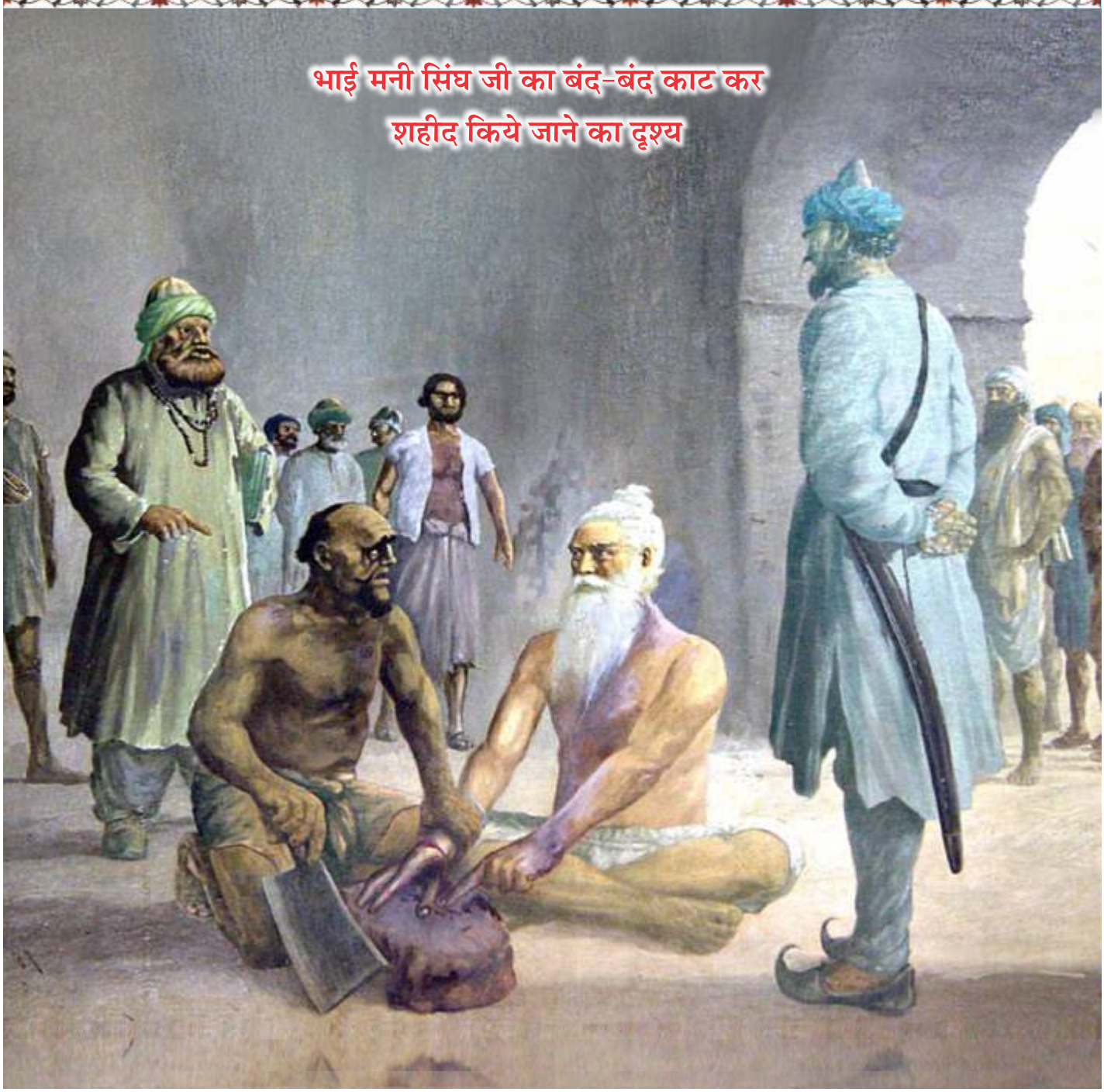

भाई मनी सिंघ जी का बंद-बंद काट कर
शहीद किये जाने का दृश्य

# दाख़िला सूचना

## पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा
## इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्टडीज़ इन सिक्खिज़म
## बहादरगढ़ ( पटियाला )

**नये दाख़िले के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू**

# बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़ ( गुरुद्वारा मैनेजमेंट )
# BACHELOR OF MANAGEMENT STUDIES (GURDWARA MANAGEMENT)

( श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतहिगढ़ साहिब )

## त्रैवार्षिक डिग्री कोर्स

### योग्यता और फीस

- शैक्षिक योग्यता 12वीं कक्षा ( कोई भी ग्रुप ) उत्तीर्ण हो तथा उम्मीदवार गुरसिक्ख होना चाहिए।
- 12वीं कक्षा के इम्तिहान के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे उम्मीदवार भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु-सीमा अधिक से अधिक 22 वर्ष हो।
- वार्षिक फीस केवल 5000/- रुपए है।

### सुविधाएं

- रिहायश के लिए फ्री होस्टल के अलावा हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल और पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास-रूम और कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में नौकरी के वक्त प्राथमिकता।
- धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से भोजन ( लंगर ) आदि के ख़र्च के लिए 1500/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा।

### उच्च शिक्षा और रोज़गार संभावनायें

- यूनिवर्सिटी नियमों के अनुसार एम.बी.ए., एम. कॉम. के अलावा धर्म, इतिहास आदि विषयों में एम. ए. या पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा कर सकते हैं।
- सरकारी और ग़ैर-सरकारी अदारों में स्नातक स्तर की असामियों के लिए योग्य।
- गुरुद्वारा प्रबंध के अलावा अन्य समाजसेवी और प्रशासनिक अदारों में सेवा करने के योग्य होंगे।
- देश-विदेश में गुरुद्वारा साहिबान में सेवाएं देने के योग्य होंगे।

दाख़िले संबंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

**97810-10888, 90416-20861, 75270-56756**

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

**1500/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़े की सुविधा**

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

हरजिंदर सिंघ एडवोकेट
प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

*गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥*

मासिक

# गुरमत ज्ञान

आषाढ़–सावन संवत् नानकशाही 557
वर्ष 18 अंक 11 जुलाई 2025

*संपादक : सतविंदर सिंह*
*सहायक संपादक : जगजीत सिंह*

| चंदा | |
|---|---|
| सालाना (देश) | 10 रुपये |
| आजीवन (देश) | 100 रुपये |
| सालाना (विदेश) | 250 रुपये |
| प्रति कापी | 3 रुपये |

***चंदा भेजने का पता***

**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी**

**(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)**

**श्री अमृतसर साहिब -143006**

**फोन :** 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

**फैक्स :** 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

आध्यात्मिक सत्ता के पावन स्रोत : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब 7
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

गुरु-दरबार के दीवान : भाई मनी सिंघ जी 14
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल

भाई मनी सिंघ जी का शहीदी-वृत्तांत : चित्र-चित्रण के माध्यम से 20
–स. जगतारजीत सिंघ

शहीद भाई तारू सिंघ जी 25
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर

बीबी सुक्खां जी 28
–डॉ. अमरजीत कौर इब्बण कलाँ

सिक्ख परंपरा में बाज़ 31
–डॉ. परमवीर सिंघ

श्री अमृतसर साहिब के ऐतिहासिक बुंगे 36
–स. हरविंदर सिंघ खालसा

हउमै दीरघ रोगु है . . . 42
–डॉ. मनजीत कौर

ख़बरनामा 47

# गुरबाणी विचार

*सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥*
*मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥*
*पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥*
*सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥*
*हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए॥*
*नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥* *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०८)*

तुखारी राग में उच्चरित बारह माहा बाणी के इस पावन शबद में प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी सावन माह की सुहावनी वर्षा ऋतु का सुंदर चित्र प्रस्तुत करते हुए, सावन माह जैसी जीवन अवस्था में परमात्मा-पति के साथ जीव-स्त्री के मिलन की आकांक्षा को व्यक्त करते हैं। जैसे कोई विवाहित स्त्री सावन माह में अपने परदेसी पिया को याद कर उससे मिलने को तड़प उठती है, इसी प्रकार के मिलन का चित्र-चित्रण करते हुए गुरु जी ने इस शब्द में जीव को परमात्मा के साथ मिलने, उसे पाने का सुगम मार्ग दरसाया है।

गुरु जी कथन करते हैं कि सावन मास में ऐ मेरे मन! तेरा प्रसन्न होना स्वाभाविक है। वर्षा ऋतु है। अब तू भी आनंदित हो जा! इस सुहावने मौसम में जीव-स्त्री के मन में परमात्मा-पति के मिलन की उत्कंठा का जगना स्वाभाविक है।

जब मेरा परमात्मा-पति मेरे हृदय-घर में नहीं है, ऐसे में मैं उसे पाने को बिलख रही हूं। वर्षा में चमक रही आसमानी बिजली मुझे भयभीत करती है। मेरी मन रूपी सेज सूनी है। यह दशा अति दुखदायक है । परमात्मा-पति के वियोग का दुख मेरे लिए मृत्यु के समान है। परमात्मा-पति के बिना न नींद आती है और न ही भूख लगती है अर्थात् मेरे जीवन की प्राकृतिक प्रक्रिया भी डगमगा गई है। परमात्मा-पति के बिना सावन माह में सुंदर वस्त्र पहनने की रुचि भी नहीं रही अर्थात् परमात्मा-पति के पास न होने पर सुंदर से सुंदर वस्त्र भी शरीर को सुखद नहीं लगते।

गुरु जी अंतिम पंक्ति में बख़्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि परमात्मा-पति की भाग्यशाली सुहागिन वही जीव-स्त्री है जो परमात्मा-पति की याद को सदा हृदय में संभाले रखती है, उसे हर पल याद करती है, हर वक्त उसका नाम-सुमिरन करती है।

संपादकीय

# मीरी-पीरी का बेजोड़ सिद्धांत

सिक्ख इतिहास अनुपम और बेमिसाल है। सिक्ख गुरु साहिबान ने निरंतर परिश्रम कर आध्यात्मिक व नैतिक मानव-जीवन मूल्यों पर आधारित, कल्याणकारी धर्म— सिक्ख धर्म की स्थापना की। गुरु साहिबान ने अपने-अपने समय में अपने अनुयायी सिक्खों को अन्याय और अत्याचार का सामना करने के लिए साहस और सामर्थ्य प्रदान किया।

छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के काल में परिस्थितियाँ अत्यंत संवेदनशील थीं, इसलिए उन्हेंने अपने अनुयायियों को शस्त्रधारी बनने को प्रेरित किया। गुरु जी का यह निर्णय कोई व्यक्तिगत शौक नहीं था, जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने समझा है, बल्कि यह समय की माँग और आवश्यकता थी। समय की मांग को पूरा करना ही पड़ता है, अन्यथा अन्यायपूर्ण परिस्थितियों का सामना नहीं किया जा सकता। यह बात अलग है कि अन्याय और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही आरंभ हो चुका था।

श्री गुरु नानक देव जी ने इस विशेष धर्म के अनुयायियों को हर प्रकार के अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध डटने और इसका विरोध करने की शिक्षा दी थी। उस समय के लोदी शासकों की जनविरोधी नीतियों और बाबर के आक्रमण के दौरान हुए अमानवीय घटनाक्रम का गुरु जी ने कड़ा विरोध किया था। वे शासक और आक्रमणकारी चाहे कितने ही क्रूर और अत्याचारी क्यों न थे, परंतु सच्चाई की आवाज़ ने कभी उनसे भय नहीं खाया।

पाँचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी तक के सभी गुरु साहिबान अपने-अपने ढंग से सच्चाई की गवाही भरते रहे। श्री गुरु अरजन देव जी शांति के प्रतीक थे। उन्होंने तत्कालीन मुगल हुकूमत की दमनकारी नीतियों को भली-भाँति भांप लिया था, इसलिए उन्होंने अपने योग्य पुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को घुड़सवारी और शस्त्र-विद्या दिलवानी शुरू करवा दी थी। सिक्ख इतिहास में उल्लेख आता है कि पंचम गुरु जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अत्याचारी हुकूमत का सामना डटकर करने के आदेश दिए थे।

छठे गुरु जी की आयु भले ही कम थी, लेकिन उनके इरादे बुलंद थे। गुरु जी ने शाही वस्त्र धारण कर, सुन्दर पगड़ी सिर पर सजाकर, मीरी-पीरी की प्रतीक दो कृपाणें धारण कर और स्वतंत्र सत्ता के जलाल-

प्रतीक 'बाज' को अपने पास रख कर यह सन्देश स्पष्ट रूप से दिया कि श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत से अन्याय के विरुद्ध सच्चाई की आवाज़ को दबाया नहीं जा सकता। अब श्री गुरु नानक देव जी के अनुयायी सिक्ख अन्याय के खिलाफ डटकर खड़े होंगे।

गुरु जी ने शीघ्र ही बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी के हाथों श्री अकाल तख़्त साहिब (अकाल बुंगा) का निर्माण करवाया। इस प्रकार श्री अकाल तख़्त साहिब साकार रूप से प्रकट हुआ। यह तत्कालीन ज़ालिम हुकूमत के लिए स्पष्ट चेतावनी थी कि अब सिक्ख सलतनत से डरने वाले नहीं हैं।

छठे गुरु साहिब ने अपने अनुयायी सिक्खों को आदेश, संदेश और हुकमनामे भेजे कि वे गुरु-घर में बढ़िया शस्त्र और उत्तम नस्ल के घोड़े भेंट करें। गुरु साहिब ने अपनी देखरेख में कुश्ती, गतका, घुड़सवारी, नेजाबाज़ी आदि शारीरिक अभ्यास शुरू करवाए। कुछ ही समय में एक सशक्त सिक्ख सेना तैयार हो गई, जिसने आक्रमणकारियों का डटकर सामना करते हुए सच्चाई की विजय को इतिहास में दर्ज करवाया।

ऐसे निडर और निर्भय गुरु साहिब द्वारा स्थापित पंथ, जिसे मीरी-पीरी का सिद्धांत सौंपा गया, आज भी कौमी स्वाभिमान और आत्मसम्मान की सुरक्षा हेतु संघर्षरत है।

सिक्ख पंथ के पास छठे गुरु पातशाह द्वारा स्थापित मीरी-पीरी का एक ऐसा अटूट सिद्धांत है, जो इसके उज्जवल भविष्य की प्रत्याभूति देता है। जुलाई का माह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इसी महीने मीरी-पीरी दिवस आता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने मीरी-पीरी के सिद्धांत के माध्यम से भारतवर्ष पर अपनी कृपादृष्टि बनाई और दिल्ली के तख़्त को यह चेतावनी दी कि जब अत्याचार की इंतहा होती है, तो अकाल पुरख की ओर से कोई न कोई संयोग अवश्य बना दिया जाता है, जो सत्ता के नशे में चूर शासकों को धूल चटा सके।

छठे पातशाह का यह संयोग वही सिद्धांत था जो प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी से आरंभ हुआ और पाँचवे पातशाह की शहादत के बाद शीर्ष पर पहुँचा और छठे पातशाह ने उसे मूर्त रूप प्रदान किया।

आओ, हम सब इस सिद्धांत पर गर्व करें और गुरु साहिबान द्वारा दिखाए मार्ग पर चलें! सम्पूर्ण सिक्ख पंथ को मीरी-पीरी के मालिक छठे पातशाह को अपने हृदय में बसाते हुए, अन्याय के विरुद्ध निरंतर संघर्ष जारी रखने का प्रण लेना चाहिए।

# आध्यात्मिक सत्ता के पावन स्त्रोत : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु हरिराय साहिब ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरुआई सौंपी। यह एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण निर्णय था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की आयु उस समय मात्र सवा पांच वर्ष थी। भारत की धार्मिक–सामाजिक परिस्थितियां निरंतर विषम होती जा रही थीं। दिल्ली के तख्त पर बैठ चुका औरंगजेब अपनी धर्मांध और क्रूर नीतियों के क्रियान्वयन में लग गया था। लोगों में भय व्याप्त होने लगा था। सिक्ख पंथ में आंतरिक संकट भी था। रामराय, जिससे श्री गुरु हरिराय साहिब पहले ही सारे संबंध तोड़ चुके थे, षड़यंत्र रचने में लगा हुआ था। ऐसे में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से सिक्ख पंथ की अपेक्षायें और आशायें बढ़ गई थीं। गुरु साहिब ने वे सारी अपेक्षायें न केवल पूरी कीं बल्कि ऐसा इतिहास रचा जिस पर आज सिक्ख पंथ ही नहीं पूर्ण मानवता गर्व करती है। उनका गुरु-काल सन् १६६१ से सन् १६६४ तक मात्र तीन वर्ष का था। किन्तु, इस अल्प काल को धर्म जगत् का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है, जब विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म का गौरव बढ़ा और उसकी प्रभुता भी स्थापित हुई।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का मन गुरबाणी के साथ जुड़ गया था। उन्हें सिक्ख पंथ के आदर्शों, सिद्धांतों का ज्ञान होने लगा था। उनका कंठ अति मधुर था। गुरु साहिब जब गुरबाणी का गायन करते तो सभी मंत्रमुग्ध हो जाया करते थे। उनकी स्मरण-शक्ति अत्यंत प्रखर थी। चार वर्ष की आयु तक उन्हें नितनेम की बाणी के अतिरिक्त श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनेक शबद कंठाग्र हो गये थे। पिता श्री गुरु हरिराय साहिब जब भी दरबार में उपदेश करते आप साथ बैठा करते और सारे वचन एकाग्रचित्त होकर सुना करते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में बैठ कर उन्हें देश-काल की परिस्थितियों से भी भली-भांति अवगत होने का अवसर मिला। श्री गुरु हरिराय साहिब के दो पुत्र थे। बड़ा रामराय था और छोटे श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब थे। एक बार दोनों आंखें बंद कर नाम-अभ्यास में ध्यानमग्न थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने उनकी अवस्था की परीक्षा के लिये एक सिक्ख को सुई

**ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ– २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

देकर उनके पास भेजा। गुरु साहिब के आदेशानुसार जब सिक्ख ने सुई रामराय को चुभोई तो उसने नेत्र खोल दिये और मुख से 'सी' का उच्चारण किया। सिक्ख ने जब सुई श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को चुभोई तो वे अडोल बैठे रहे, कोई प्रतिक्रिया नहीं की। सार यह कि उन्हें पूर्ण योग्य जान कर ही श्री गुरु हरिराय साहिब ने गुरुआई सौंपी थी। यह संगत को भी ज्ञात था इसलिये सभी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरु के रूप में देख कर हर्षित हुए थे।

गुरुआई पर आसीन होने के बाद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने गुरबाणी के माध्यम से सिक्खी सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। गुरु साहिब जानते थे कि गुरबाणी ही गुरु और सिक्ख के मध्य प्रेम-संबंध का आधार है :

*जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥*
*गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥*
*उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६)*

गुरबाणी, गुरु का सिक्ख के साथ संवाद है, उपदेश है और महान उपकार भी है। गुरबाणी गुरसिक्ख के लिये अमृत है जो उसे अंतर-जीवन प्रदान करती है। इसे ध्यान में रख कर गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कई हस्तप्रतियां तैयार कराईं जो सुंदर हस्तलिपि में लिखी हुई थीं। कई प्रतियों पर गुरु साहिब के हस्ताक्षर भी मिलते हैं। उस समय प्रिंटिंग प्रेस नहीं थे। गुरबाणी के प्रसार का यही एक विकल्प था। गुरु साहिब के दरबार में आने वाली संगत को गुरु साहिब स्वयं गुरबाणी की व्याख्या कर उनकी शंकायें भी दूर करते और मार्गदर्शन किया करते थे। संगत से मिलना और उन्हें संबोधित करना श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का नित्य का नियम था। एक बार एक सिक्ख दरबार मंत आया। उसने हाथ जोड़ कर कहा कि वह अनपढ़ है और गुरबाणी कंठस्थ करने में भी असमर्थ है। क्या वह मोक्ष-प्राप्ति से वंचित रह जायेगा? गुरु साहिब ने उसके संदेह को दूर करते हुए उससे कहा कि वह अपनी सारी शक्ति दीन-दुखियों की सेवा में लगाये और उन्हें प्रेमपूर्ण व्यवहार से सहज करे। उन्होंने कहा कि गुरबाणी सुनने का महत्व पढ़ने जैसा ही है। पढ़ना जीवन के किसी भी सोपान पर सीखा जा सकता है। गुरसिक्ख के जीवन का प्रथम और मुख्य कर्त्तव्य परमात्मा को समर्पित होना और उसका हुक्म मानना है।

पूर्व गुरु साहिबान की तरह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन भी नियमबद्ध और पावन था। आप अमृत काल में उठ कर नितनेम और ध्यान करते, फिर दरबार में आकर संगत

को दर्शन देते। गुरबाणी का कीर्तन होता, जिसके पश्चात गुरु साहिब गुरबाणी की व्याख्या करते और संगत को उपदेश देते। दरबार के बाद गुरु साहिब श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा स्थापित दवाखाने में अवश्य जाते थे और सारी व्यवस्था परखते थे। रोगियों को उनके आशीर्वाद पर बहुत विश्वास था। गुरु साहिब के करुणामयी और प्रेमपूर्ण स्पर्श-मात्र से ही रोगी स्वस्थ होने लगते थे। रोगियों के लिये गुरु साहिब के हाथों से मिली दवा अचूक सिद्ध होती थी। एक बार एक कुष्ट रोगी ने गुरु साहिब से प्रार्थना की तो गुरु साहिब ने उसे अपना रुमाल प्रदान किया। रुमाल को तन से लगाते ही उसका वर्षों पुराना रोग दूर हो गया। रात को पुन: दीवान लगता, गुरबाणी-कीर्तन होता और गुरु साहिब संगत से संवाद करते। सरल और संवेदनशील व्यवहार तथा गुरबाणी की प्रभावशाली व्याख्या के कारण गुरु साहिब की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी। विभिन्न धर्मों, वर्गों के लोग सिक्ख बनने लगे। रामराय, जो गुरुआई न मिलने से आक्रोशित था और जिसे श्री गुरु हरिराय साहिब पहले ही पंथ से निष्कासित कर चुके थे, दुष्प्रचार कर रहा था, किन्तु उसका कोई प्रभाव न पड़ा। अंत में हार कर रामराय ने औरंगजेब की शरण ली और स्वयं को गुरुआई का दावेदार बताते हुए हस्तक्षेप की प्रार्थना की। औरंगजेब एक कुटिल और अन्यायी शासक था। उसे लगा कि इसमें हस्तक्षेप कर वह सिक्ख धर्म के प्रसार को रोक सकता है। औरंगजेब ने रामराय को आश्वस्त किया कि वह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली बुला कर बात करेगा। दिल्ली के सिक्खों को जब यह बात ज्ञात हुई तो सिक्खों ने इसमें निहित षड़यंत्र को भांप लिया और आशंकित हो उठे। उन्होंने औरंगजेब के विश्वासपात्र राजा जय सिंह से संपर्क किया। राजा जय सिंह भली-भांति अवगत था कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का कितना प्रभाव है। यदि उनका तनिक भी अहित हुआ तो सिक्खों के मन पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा। औरंगजेब को तख्त पर बैठे अधिक समय नहीं हुआ था और वह अपनी स्थिति मजबूत करने की ओर ध्यान दे रहा था। अत: राजा जय सिंह ने गुरु साहिब को दिल्ली बुलाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। उसने औरंगजेब से दो आश्वासन ले लिये। एक तो यह कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का कोई अहित नहीं होगा, दूसरा यह कि गुरु साहिब उसके निजी अतिथि होंगे। यह वचन प्राप्त करने के बाद राजा जय सिंह ने अपने विश्वासपात्र दीवान परस राम को गुरु साहिब को दिल्ली आने का आमंत्रण-पत्र देने हेतु उपहार आदि देकर कीरतपुर साहिब भेजा। परस राम जब कीरतपुर

साहिब पहुंचा तो उसने गुरु साहिब को औरंगजेब का दिल्ली आने का आमंत्रण-पत्र और उपहार आदि भेंट किये। परस राम ने गुरु साहिब से अनुरोध किया कि यदि वे दिल्ली आते हैं तो रामराय द्वारा किये गये दुष्प्रचार का अंत हो जायेगा, दिल्ली के सिक्खों का मनोबल बढ़ेगा और औरंगजेब को उनके प्रभाव का प्रत्यक्ष ज्ञान होगा।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने जब दिल्ली जाने के आमंत्रण के संबंध में विचार-विमर्श किया तो यह आशंका उभर कर सामने आई कि दिल्ली जाने में खतरा अधिक है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के सामने श्री गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु हरिराय साहिब तक का साहस, समर्पण और वीरता का गौरवशाली इतिहास था। वे औरंगजेब तथा किसी अनिष्ट से भयभीत कैसे हो सकते थे! श्री गुरु अरजन साहिब स्वयं चल कर लाहौर गये थे और मुगल शासन के सारे दबाव धूल में मिलाते हुए स्वयं शहीदी का विकल्प चुना था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के हाथों शाहजहां को लगातार चार युद्धों में करारी पराजय का सामना करना पड़ा था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने कोई परवाह न करते हुए शरण में आये दाराशिकोह की औरंगजेब से जान बचाई थी। यह शूरवीरता अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग की दक्षता और युद्ध-कौशल की नहीं, परमात्मा के रंग में रंग जाने से उत्पन्न हुई शूरवीरता थी :

*जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥*
*आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥१ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६७९ )*

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब चैतन्य होते ही परमात्मा के रंग में रंगे गये। पांच वर्ष के होते-होते वे आध्यात्म के सारे भेद जान गये थे। गुरबाणी उनके मन में बस चुकी थी और वे सहज अवस्था को प्राप्त कर चुके थे। परमात्मा का एक गुण— उसका किसी भी भय से रहित होना है। ऐसे परमात्मा में रम जाना निर्भय हो जाना है— *"निरभउ जपै सगल भउ मिटै॥"* गुण अंतर्निहित होते हैं जो उचित अवसर पर प्रकट होते हैं। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने कहा कि उन्हें कोई भय नहीं है। उन्होंने दिल्ली जाने का निर्णय कर लिया। यह निर्णय अति कठिन था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब पिता श्री गुरु हरिराय साहिब को वचन दे चुके थे कि वे कभी भी औरंगजेब के सामने नहीं जाएंगे :

*नहि मलेछ को दरसन दे हैं।*
*हुई समीप तिस को नहि लै हैं।*
*इही नेम पित कीनि हमारे।*
*तिस प्रकार हम भी उर धारे। (सूरज प्रकाश)*

गुरु साहिब द्वारा दिल्ली-यात्रा से सिक्खों के मन से औरंगजेब का भय भी दूर करना था और

सिक्ख पंथ के आदर्शों व सिद्धांतों को भी प्रकट करना था। इससे रामराय के दुष्प्रचार का खंडन भी किया जाना था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने सन् १६६४ के फरवरी माह के मध्य में कीरतपुर साहिब से दिल्ली के लिये प्रस्थान किया। उनके साथ माता सुलक्खणी जी व लगभग तीस प्रमुख सिक्ख भी थे। यात्रा में पहला पड़ाव दयालपुर था जहां गुरु साहिब अपनी बहन माता रूप कौर से मिले। गुरु साहिब का अगला पड़ाव पंजोखरा था। यहां एक सिक्ख ने गुरु साहिब को सूचना दी कि पेशावर, काबुल और काश्मीर से चल चुकी संगत यहां पहुंचने ही वाली है। यह संगत आने वाली बैसाखी में शामिल होने कीरतपुर साहिब जाने वाली थी। गुरु साहिब पंजोखरा रुक गये और संगत को दर्शन, आशीर्वाद दिया। पंजोखरा में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की अपार शोभा देख कर एक स्थानीय पंडित लालचंद ईर्ष्या से भर उठा। उसने अनेक धर्म-ग्रंथ पढ़ रखे थे और उसे अपने ज्ञान का भारी अभिमान था। पंडित लालचंद ने चुनौती भरे लहजे में गुरु साहिब से गीता के अर्थ करने को कहा। गुरु साहिब उसके मन का भाव जान गये और मुस्करा कर कहा कि यह कठिन कार्य नहीं, यह तो उनका कोई साधारण सिक्ख भी कर सकता है। पंडित लालचंद छज्जू नामक व्यक्ति को ले आया जो कथित निम्न झींवर जाति का पूर्ण अनपढ़ था। गुरु साहिब ने छज्जू के सिर पर अपनी छड़ी रख कर आशीर्वाद दिया और पंडित लालचंद के प्रश्नों का उत्तर देने को कहा। छज्जू ने पंडित लालचंद के सभी प्रश्नों के उत्तर इतने विद्वतापूर्ण ढंग से दिये जैसे कई धर्म-ग्रन्थों का महान ज्ञाता हो। वहां उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये और पंडित लालचंद का अभिमान खंड-खंड हो गया। वह गुरु साहिब के पैरों पर गिर पड़ा और क्षमा-याचना करने लगा। यही पंडित लालचंद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत-पान कर 'लाल सिंघ' बना और चमकौर के युद्ध में शहीद हुआ था। छज्जू को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने इस क्षेत्र का प्रचारक नियुक्त किया और स्वयं दिल्ली की ओर बढ़ गये।

पंजोखरा से गुरु साहिब कुरुक्षेत्र आये, जहां उनका भरपूर स्वागत हुआ। यहां पूर्व में श्री गुरु नानक साहिब, श्री गुरु अमरदास साहिब, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु हरिराय साहिब आ चुके थे। यहां बानी बदरपुर, करनाल और पानीपत रुकते हुए श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब एक सप्ताह में दिल्ली पहुंचे। दिल्ली में राजा जय सिंह ने अपने पुत्र राजा राम सिंह और रानी आनंद कौर, रानी जोधी, रानी राज कौर तथा अनेक दरबारियों के साथ गुरु साहिब एवं उनके दल का भरपूर स्वागत किया व उपहार आदि

भेंट किये। राजा जय सिंह ने गुरु साहिब को अपनी हवेली में सम्मान सहित ठहराया। वह गुरु साहिब के शांत, धीर-गंभीर, किन्तु ओजपूर्ण व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित हुआ। राजा जय सिंह की पटरानी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की बाल आयु देख कर भ्रमित थी। गुरु साहिब ने जब हवेली में प्रवेश किया तो पटरानी दासियों वाले वस्त्र धारण कर दासियों के बीच बैठ गई। अंतर्यामी गुरु साहिब पटरानी के मन की दुविधा को जान गये और सीधे जाकर दासी बनी पटरानी की गोद में बैठ गये। रानी के साथ ही उन सभी लोगों के भ्रम मिट गये जो गुरु साहिब की आयु से अटपटे अनुमान लगा रहे थे। गुरु साहिब के दिल्ली-आगमन की सूचना औरंगजेब को दे दी गई। औरंगजेब को जब राजा जय सिंह के माध्यम से और दिल्ली के सिक्खों से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की आध्यात्मिक श्रेष्ठता व प्रभाव के बारे में पता चला तो उसे विश्वास हो गया कि गुरुआई को लेकर की गई रामराय की बातें निराधार हैं। फिर भी औरंगजेब ने अपनी कुटिलता नहीं छोड़ी और रामराय को जागीर के रूप में दून घाटी में कुछ गांव देकर संतुष्ट करने का कार्य किया। यहां रामराय ने अपना धार्मिक केंद्र स्थापित किया जिसे 'रामराय का देहरा' कहा जाने लगा। बाद में इसी स्थान का नाम 'देहरादून' पड़ा।

औरंगजेब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के प्रभाव के बारे में जानने के बाद उनसे मिलने को उत्सुक हो उठा। औरंगजेब ने मिलने का संदेश भेजा। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने उसके संदेश पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की और अनसुना कर दिया। देश के सबसे शक्तिशाली राजा के गढ़ में उसके कथन को अमान्य कर देना एक ऐसा साहसपूर्ण कार्य था जो किसी परम दैवीय शक्ति के लिये ही संभव था, जो उस समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब में बस रही थी। यह बादशाह को सीधी चुनौती थी। गुरु साहिब के दिल्ली आने का वास्तविक उद्देश्य तब प्रकट हुआ जब उन्होंने दिल्ली पहुंचते ही अपनी कीरतपुर साहिब वाली दिनचर्या का पालन आरंभ कर दिया। स्थानीय सिक्खों ने राजा जय सिंह की हवेली में जुटना आरंभ कर दिया। कीरतपुर साहिब का दृश्य जीवंत हो उठा। गुरु साहिब का दरबार लगता, शबद-कीर्तन होता। गुरु साहिब संगत के प्रश्नों का समाधान करते और उपदेश देते। इन्हीं दिनों दिल्ली एक संक्रामक रोग की गिरफ्त में आ गई। पहले हैजा फैला, फिर चेचक फ़ैल गई। गुरु साहिब रोगियों की सेवा में लग गये। वे निर्धन लोगों की बस्तियों में जाते और रोगियों की सेवा, देखभाल करते, उन्हें औषधियाँ भी देते। गुरु साहिब की सेवा और उपचार से संक्रामक रोग नियंत्रण में

आ गया। रोगी स्वस्थ होने लगे। औरंगजेब तक जब ये समाचार पहुंचे तो उसने पुन: गुरु साहिब को अपने दरबार में आने का निमंत्रण भेजा। गुरु साहिब ने फिर अनसुना कर दिया। बाद में २४ मार्च को औरंगजेब ने २८ मार्च, सन् १६६४ की तिथि गुरु साहिब से भेंट के लिये तय की और राजा जय सिंह से उचित प्रबंध करने को कहा। किन्तु, २५ मार्च को प्रात: ही गुरु साहिब ने घोषणा कर दी कि वे अगले पांच दिन ध्यान और सुमिरन में व्यतीत करेंगे। यह भी परोक्ष रूप से औरंगजेब के आमंत्रण को रद्द करने जैसा ही था। दोपहर होते-होते गुरु साहिब को तेज ज्वर हो गया और छोटी चेचक निकल आई। पांच दिन ज्वर और चेचक का प्रकोप जारी रहा। छठे दिन जब स्थिति गंभीर हो गई तो सभी चिंतित हो उठे। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की आज्ञा से ही उन्होंने गुरुआई का दायित्व उठाया है। अब संसार से विदा भी उसकी ही इच्छा से होना है। श्री गुरु नानक साहिब का पंथ सदा आगे बढ़ता रहेगा। सिक्खों के यह पूछने पर कि अब पंथ किसके अधीन होगा, मुख से दो ही शब्दों का उच्चारण किया— "बाबा . . . बकाले!" यह अगले गुरु अर्थात् उस समय बकाला में रह रहे श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गुरुआई सौंपने का संकेत था। इस दिन अर्थात् ३० मार्च, सन् १६६४ को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ज्योति-जोत समा गये। दिल्ली में यमुना नदी के किनारे गुरु साहिब का अंतिम संस्कार किया गया। इस अवसर पर अंतिम अरदास भाई गुरदित्ता जी ने की।

दिल्ली में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब राजा जय सिंह की जिस हवेली में रुके थे वहां आज गुरुद्वारा बंगला साहिब बना हुआ है। इस स्थान को, क्योंकि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के चरण-स्पर्श और जप-तप का सौभाग्य प्राप्त है, इसलिये यहाँ पर निरंतर विशेष रूप से रोग-मुक्त होने की आशा से आने वालों का तांता लगा रहता है।

यह स्थान रोग-मुक्ति का ही नहीं, सिक्ख सिद्धांतों की दृढ़ता और अपार साहस भरी प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। औरंगजेब ने जहां रामराय का लोभ और स्वार्थ देखा जिसका सिक्ख पंथ में कोई स्थान नहीं है, वहाँ उसने सिक्खों में सहज, सेवा, साहस और प्रेम का शिखर भी देखा जो श्री गुरु नानक साहिब के पंथ के आभूषण हैं। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का ध्यान धरना ही सर्वफल प्रदान करने वाला है।

# गुरु-दरबार के दीवान : भाई मनी सिंघ जी

*–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

भाई मनी सिंघ जी उन खास सिक्ख शख्सियतों में से एक हैं जिन्होंने गुरु साहिबान की शरण में रहकर जीवन-युक्ति सीखी और गुरु साहिबान के बाद अपने कुशल नेतृत्व से सिक्खों का मार्गदर्शन किया। बंद-बंद कटा कर शहादत देने वाले महान् शहीद भाई मनी सिंघ जी भी दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में से एक थे। ज्ञानी गिआन सिंघ ने अपने ग्रंथ 'तवारीख गुरू खालसा' में भाई मनी सिंघ जी की विद्वता को बहुत सराहा है और इनकी गणना दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में की है :

*कवी बवंजा थे गुर पास।*
*उन मैं गनना इनकी खास॥ (पंथ प्रकाश)*

**गुरसिक्ख परिवार में जन्म**

भाई मनी सिंघ जी के जन्म एवं जन्म-स्थान के विषय में सिक्ख इतिहास-ग्रंथ एकमत दिखाई नहीं देते। 'महान कोश' के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा सहित अनेक इतिहासकार मानते हैं कि भाई मनी सिंघ जी का जन्म पटियाला के गाँव कैबोवाल में सन् १६६८ ई. में हुआ। इस गाँव के खंडहरों का टीला आज भी लौंगोवाल गाँव के निकट स्थित है।

'प्रमुख सिक्ख शख्सियतां' पुस्तक में डॉ. जसबीर सिंघ ने भाई सेवा सिंघ भट्ट (भाट) की रचना 'शहीद बिलास' के आधार पर भाई मनी सिंघ जी के जन्म, जन्म-स्थान एवं वंश-परम्परा का तर्क-आधारित निर्धारण किया है। इनके अनुसार भाई जी का जन्म सुलतानपुर के निकट स्थित गाँव अलीपुर में चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी दिन रविवार बिक्रमी सम्वत् १७०१ मुताबिक मार्च के अंतिम सप्ताह में सन् १६४४ ई. में हुआ।

वंश-परंपरा के अनुसार भाई मनी सिंघ जी के परिवार का संबंध छठम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ जा जुड़ता है। भाई साहिब के दादा भाई बलू राव छठम पातशाह के अनन्य सिक्ख एवं सिपहसालार थे। भाई बलू राव श्री अमृतसर साहिब की जंग में १५ अप्रैल १६२८ ई. को शहीद हुए थे। भाई

* *१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना फोन : ६२३९६-०१६४१*

बलू राव के १२ पुत्र थे। इनमें से दूसरे नंबर पर थे— भाई माई दास। भाई माई दास के दो विवाह हुए थे। पहली पत्नी से सात एवं दूसरी पत्नी से पाँच पुत्र हुए। भाई मनी सिंघ जी पहली पत्नी के सात पुत्रों में से एक थे। इस प्रकार भाई साहिब १२ भाई थे और सभी ने सिक्ख आदर्शों की रक्षा के लिए शहादत दी।

**बालपन एवं चार गुरु साहिबान की छत्र-छाया मिलना**

भाई मनी सिंघ जी के बचपन का नाम 'मनी राम' था और आपको प्यार से 'मनिया' कहकर बुलाया जाता था। भाई मनी राम जब १३ वर्ष के हुए तो पिता भाई माई दास उन्हें लेकर सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय जी के दरबार में कीरतपुर साहिब आये। सप्तम पातशाह इस सुंदर बालक को देखकर अति प्रसन्न हुए और "मनीआ इह गुनीआ होवेगा बीच जग सारे" कहकर गुणवान होने का आशीर्वाद दिया। भाई मनी राम गुरु-दरबार में रहकर सेवा-कार्य में जुट गए। इन्हीं दिनों मात्र १५ वर्ष की आयु में भाई मनी राम का विवाह खैरपुर के लक्खीराय की पुत्री माता सीतो के संग हो गया।

भाई मनी राम निरंतर गुरु-घर की सेवा करते रहने से गुरु-परिवार के प्रिय बन गए। सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय जी के ज्योति-जोत समाने के बाद भाई मनी राम आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की सेवा में आ गए। गुरु जी जब सन् १६६४ ई. में दिल्ली गये तब भाई मनी राम साथ थे। पातशाह सात वर्ष की आयु में ज्योति-जोत समा गये। तब भाई मनी राम बकाला गाँव में चिंतन-आराधन कर रहे श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास चले आये। इन्हीं दिनों, कुछ समय अपने गाँव अलीपुर में रहने के बाद, श्री गुरु तेग बहादर जी के गुरुआई पर विराजमान होने पर भाई मनी राम श्री अनंदपुर साहिब (चक्क नानकी) आकर गुरु-सेवा में लीन हो गये।

नवंबर सन् १६७५ ई. में जब नवम् पातशाह दिल्ली गये तो भाई मनी राम को पीछे बालक गोबिंद राय जी (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) के पास ही रुकने का हुक्म मिला। भाई मनी राम के बड़े भ्राता भाई दिआला जी नवम् पातशाह के साथ दिल्ली गये। वहाँ गुरु जी ने चाँदनी चौक में शीश कटा कर शहादत दी तो भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी की शहादत के साथ-साथ भाई दिआला जी को भी उबलते पानी की देग में बैठा कर शहीद कर दिया गया।

**दशमेश पिता की सेवा में भाई मनी राम**

नवम् पातशाह की शहादत के बाद भाई मनी

राम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में आ गये। दशमेश पिता सिक्खों को शस्त्रधारी बनाने में लगे हुए थे। गुरु जी के इन प्रयासों में भाई मनी राम पेशपेश रहे। आप शीघ्र ही चुस्त-फुर्तीले और युद्ध-कला में कुशल योद्धा के रूप में उभरे।

भाई साहिब पाउँटा साहिब में भी दशमेश पिता के साथ ही रहे। यही नहीं, रामराय के देहांत के समय आप गुरु जी के साथ देहरादून भी गये। रामराय की पहली बरसी पर आपने ५० सिक्खों सहित दशमेश पिता के प्रतिनिधियों के रूप में हाज़िरी भरी।

भाई मनी राम ने दशमेश पिता के साथ प्रत्येक युद्ध में उत्साह से भाग लिया। विशेष रूप से आपने 'भंगाणी के युद्ध' में विशेष जौहर दिखाये। इन जंगों में भाई मनी राम एक दिलेर योद्धा के रूप में उभरे। भाई मनी राम की अद्वितीय सेवा से प्रसन्न होकर दशम पातशाह ने सम्वत् १७४८ वि० बैसाखी वाले दिन (सन् १६९१ ई.) आपको गुरु-दरबार का 'दीवान' नियुक्त किया।

**योद्धा भी और विद्वान भी**

भाई मनी राम तेग के साथ-साथ कलम के भी धनी थे। आपको लंगर आदि की सेवा से जब भी फुरसत मिलती आप गुरबाणी का अभ्यास आरंभ कर देते। गुरमति एवं गुरबाणी को समझने के लिए आपने भाई गुरदास जी की वारों का गहन अध्ययन किया। जब दशमेश पिता ने देखा कि आपकी रुचि अध्ययन-चिंतन की ओर अधिक है, तब आपको लंगर की सेवा से मुक्त करके धर्म-ग्रंथों के अध्ययन-विश्लेषण की सेवा सौंपी गई। थोड़े ही समय में भाई मनी राम संस्कृत एवं फारसी के उत्कृष्ट विद्वान् बन गये। गुरु साहिब ने आपको एक पाठशाला खोल दी, जहाँ आप सिक्खों को धार्मिक विद्या देने लगे। भाई मनी राम की श्रेष्ठ विद्वता से प्रसन्न होकर दशम पातशाह ने आपको 'ज्ञानी' का खिताब बख्शा। सिक्ख धर्म के ज्ञानियों में आपका स्थान बहुत महत्वपूर्ण है।

**भाई मनी राम से भाई मनी सिंघ**

सन् १६९९ ई. की बैसाखी वाले दिन जब दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खालसा' पंथ की सृजना की तो उसी दिन भाई मनी राम ने भी, लगभग ५५ वर्ष की आयु में, दशमेश पिता के हाथों अमृत छका और भाई मनी राम से भाई मनी सिंघ हो गये :

*निज कर ते गुर अंम्रित दीओ।*

*मनीए थी, सिंघ मनीए कीयो। (शहीद बिलास)*

इसी सौभाग्यशाली दिन भाई मनी सिंघ जी एवं उनके पाँच पुत्रों ने भी दशमेश पिता के

कर-कमलों से अमृत-पान किया और 'सिंघ' सज गये।

**श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब की प्रबंध-सेवा**

इन्हीं दिनों श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर साहिब का प्रबंध देखने वाले महंत सोढी हरि जी का देहांत हो गया। इसके बाद उनका पुत्र निरंजन राय गद्दी पर बैठा, परंतु वह अपने सम्प्रदाय को एकजुट न रख सका। इसी वजह से श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब का प्रबंधसुचारू रूप से चलाने वाला कोई न रहा। श्री अमृतसर साहिब की संगत ने दशम पिता से आग्रह किया कि श्री दरबार साहिब की प्रबंध व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए सिंघों को भेजें। दशम पातशाह ने भाई मनी सिंघ जी को पाँच अन्य सिंघों— भाई भूपत सिंघ, भाई गुलजार सिंघ, भाई कौर सिंघ, भाई दान सिंघ एवं भाई कीरता सिंघ के साथ श्री हरिमंदर साहिब की मर्यादा बहाल करने के लिए भेजा। भाई साहिब ने इस कर्त्तव्य को बाखूबी निभाया।

श्री अमृतसर साहिब में निवास के दौरान भी भाई मनी सिंघ जी कई बार श्री अनंदपुर साहिब आये और गुरु-चरणों में हाज़िरी भरी।

**उच्च कोटि के कवि**

भाई मनी सिंघ जी उच्च कोटि के कवि भी थे। पंजाबी में रचे गये आपके छंदों में गुरमति विचारधारा एवं गुरु की महिमा का वर्णन है :

*सति सरूप पाहि दा सागर,*
*वतरि लगी भाल जिउ भाला।*
*गुर गोबिंद दी रंगण रते,*
*थीए लाल गुलाला।*
*सिक्कां सिक्क सज्जण दी दिल विच,*
*ज़रबि अनूप बणी अति आला।*
*'मनीराम' न काण कहीं दी,*
*साडा सिर परि कलगी वाला।*
*इसी प्रकार एक उदाहरण और देखें :*
*सति सरूप सति जिन जाता,*
*से सतिपुरख दे पिआरे।*
*मन बच करम अधर को डारह,*
*बैसहि ते जन खारे।*
*किचरकु अझै संत सिउ साकत,*
*जेन केन बिधि हारे।*
*'मनीराम' रुक जैं वलि संगति का,*
*गुरू पासा तितु वलि ढाले।*

*सम्पूर्ण परिवार की कुर्बानी*

भाई मनी सिंघ जी का पूरा परिवार गुरु-घर की सेवा में सदा तत्पर रहा। भाई साहिब के सभी भाइयों ने गुरु-कार्य में जीवन न्योछावर किया। आपके पाँचों पुत्र प्रसिद्ध चमकौर की जंग (दिसम्बर, १७०४ ई.) में दोनों बड़े

साहिबजादों— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी के संग शहीद हुए। मदमस्त हाथी को 'नागणी' के एक ही वार में मार गिराने वाले भाई बचित्तर सिंघ भी भाई मनी सिंघ जी के ही पुत्र थे।

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पुनर संपादना के समय लिखारी की सेवा**

दिसम्बर, १७०४ ई. में जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा तब भाई मनी सिंघ जी को माता सुंदरी जी एवं माता साहिब कौर जी के साथ दिल्ली जाने का आदेश दिया गया। आप माताओं के साथ कुछ समय दिल्ली में रहे। गुरु साहिब जब श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो पहुंचे तो आप भी माताओं के साथ गुरु-दर्शन को श्री दमदमा साहिब आ गये।

इस समय पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा तैयार करवाई गई श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ धीरमलियों के पास थी। धीरमलियों ने दशम पातशाह को ताना मारा कि अगर आप सच्चे गुरु हैं तो अपनी बीड़ स्वयं तैयार करवा लें।

दशमेश पिता ने बीड़ पुनर संपादना करने के लिए भाई मनी सिंघ जी को चुना। गुरु जी बाणी लिखवाते गये और भाई साहिब लिखते गये। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की दूसरी बीड़ तैयार हुई। पहली 'आदि बीड़' श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी से लिखवाई थी।

दशम पातशाह जब दक्षिण में जाने लगे तो उन्होंने भाई मनी सिंघ जी को श्री हरिमंदर साहिब की सेवा-संभाल करते रहने का हुक्म दिया। भाई साहिब श्री अमृतसर साहिब आ गये।

**बाबा बंदा सिंघ बहादुर के काल में भाई मनी सिंघ जी**

नांदेड़ में दशमेश पिता के ज्योति-जोत समाने के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर गुरु-आज्ञा सिर-माथे धारण करके पंजाब आये और सिक्खों को नेतृत्व प्रदान किया। बाबा जी की विजयों ने सिक्खों का एक बार फिर से बोलबाला कर दिया। इस काल में भाई साहिब का पूरा सहयोग बाबा बंदा सिंघ बहादुर को मिला।

**बंदई खालसा एवं तत्त खालसा का विलय**

सन् १७१६ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद खालसा पंथ 'बंदई खालसा' और 'तत्त खालसा' में विभाजित हो गया। एक गुट बाबा बंदा सिंघ को अपना नेता मानने लगा तथा 'बंदई खालसा' कहलाया और दूसरा गुट 'तत्त खालसा' कहलाया। सिक्खों में पड़ी इस

फूट के कारण सभी सिक्ख नेता दुखी थे। ऐसे में माता सुंदरी जी ने दोनों गुटों में समझौता करवाने की जिम्मेदारी भाई मनी सिंघ जी को सौंपी।

भाई मनी सिंघ जी ने सूझबूझ दिखाते हुए दोनों गुटों को श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर साहिब की परिक्रमा में आमंत्रित किया। भाई साहिब ने एकता करवाने के उद्देश्य से एक युक्ति सुझाई। दो पर्चियाँ बनाई गईं। एक पर तत्त खालसा का उद्घोष लिखा गया और दूसरी पर बंदई खालसा का उद्घोष लिखा गया। दोनों पर्चियाँ अमृत सरोवर में छोड़ी गईं। थोड़ी देर में बंदई खालसा की पर्ची डूब गई।

**भाई मनी सिंघ जी की शहादत**

यह वो समय था जब सिक्खों को श्री हरिमंदर साहिब में कोई भी आयोजन करने के बदले में मुगल सरकार को 'ज़ज़िया' देना पड़ता था। राजनीतिक तौर पर अव्यवस्थित रहने के कारण सिक्ख लम्बे समय से श्री हरिमंदर साहिब में बंदी छोड़ दिवस (दीवाली) नहीं मना पाये थे। सन् १७३३ में पंथ ने श्री हरिमंदर साहिब में बंदी छोड़ दिवस मनाने की योजना बनाई। इसके एवज में लाहौर के सूबेदार ज़कारिआ खान को दस हज़ार रुपये 'ज़ज़िया' के रूप में देने का समझौता किया गया।

इतने में भाई मनी सिंघ जी को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि लाहौर दरबार और खालसा-विरोधी शक्तियाँ षड्यंत्र रच रही हैं कि बंदी छोड़ दिवस पर एकत्र हुए सिक्खों को घेर कर एक साथ ख़त्म कर दिया जाये। भाई साहिब ने तुरंत संदेशे भेज कर सिक्खों को आने से रोक दिया। बंदी छोड़ दिवस वाले दिन कोई सिक्ख सभा न हुई।

इस पर लाहौर का सूबेदार ज़कारिआ खान झल्ला उठा। उसने भाई मनी सिंघ जी को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया। भाई साहिब साथियों सहित गिरफ्तार करके लाहौर लाये गये।

भाई मनी सिंघ जी को बंद-बंद काट कर शहीद करने का फतवा दिया गया। भाई मनी सिंघ जी को लाहौर के निखास चौक में शरीर का बंद-बंद काट कर शहीद कर दिया गया। लाहौर किले के निकट जहाँ भाई मनी सिंघ जी को शहीद किया गया था, वहाँ गुरुधाम शहीदगंज साहिब सुस्थित है।

# भाई मनी सिंघ जी का शहीदी-वृत्तांत : चित्र-चित्रण के माध्यम से

*–स. जगतारजीत सिंघ**

विद्वान, योद्धा और श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब की सेवा-संभाल करने वाले भाई मनी सिंघ जी (१६४४-१७३४ ई.) को भी शहीद कर दिया गया था।

तत्कालीन मुगल शासकों के पास अपने विरोधियों को खत्म करने की अपार कल्पना-शक्ति थी। उसी का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने भाई मनी सिंघ जी का बंद-बंद (अंग-अंग) काट कर शहीद करने का हुक्म सुनाया था।

चित्रकार सरदार किरपाल सिंघ ने बंद-बंद काटे जाने के समय का मन में चित्रण करते हुए एक चित्र तैयार किया है जो १९५७ ई. का बना हुआ है। यह (३३ इंच × ४३ इंच) आकार का है। संभव है कि भाई मनी सिंघ जी की शहादत का चित्रण करने वाला यह पहला चित्र है।

भाई मनी सिंघ जी के बचपन का नाम 'मनी राम' (लोग 'मनिया' भी कह लेते थे) था। पिता राव माई दास थे और माता मदरी बाई (भाई लक्खी शाह बनजारा की पुत्री) थी। मनी राम अपने बारह भाइयों में से एक थे।

तेरह वर्ष की आयु में मनी राम को उनके पिता उन्हें श्री गुरु हरिराय साहिब के पास लाए थे। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब द्वारा दिल्ली रवाना होते समय भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी भी उनके साथ थे। खौलते हुए पानी की देग में बैठने वाले भाई दिआला जी मनी राम के भ्राता थे।

१६९९ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत-पान करने के पश्चात 'मनी राम' से 'मनी सिंघ' बने। इसके पश्चात गुरु जी ने उन्हें श्री अमृतसर साहिब की सेवा हेतु भेज दिया। भाई मनी सिंघ जी बाणी के ज्ञाता होने के साथ-साथ बाणी के व्याख्याकार भी थे।

इसके अलावा वे रण-कौशल के धनी थे। उन्होंने भंगाणी तथा नादौण की जंग में भाग लिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर जब दमदमा साहिब आए तो भाई मनी सिंघ जी को भी वहाँ बुला लिया। गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतिलिपियां तैयार करवाईं।

**११८७, Partap Nagar, Jail Road, New Delhi-110064. M: +9198990-91186*

बाबा दीप सिंघ जी, जो कि उस समय दमदमा साहिब में पहले से मौजूद थे, उन्होंने भाई गुरदास जी की वारों को सम्मुख रखते हुए 'गिआन रत्नावली' की रचना की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी-रचना को एक जगह एकत्रित कर उसे 'दसम ग्रंथ' का रूप प्रदान किया गया।

कलम चलाने वाले लिखारी के हाथों ने तेग़ भी चलाई थी। फिर अपने शरीर के बंद-बंद को भी कटवाया। चित्रकार सरदार किरपाल सिंघ द्वारा बनाया गया चित्र बंद-बंद काटने की कार्यवाही की आरंभता से क्षण भर पहले का बिंब साकार कर रहा है।

चित्र और इतिहास साथ-साथ चलते हैं, क्योंकि जिस प्रकार का बिंब दर्शक को कैनवस पर देखने को मिलती है, उसकी पृष्ठभूमि में घटनाओं की श्रृंखला होती है। चित्र केवल काल्पनिक घटना-आधारित नहीं, इतिहास-निर्माता की भूमिका भी अदा करता है।

घटना १७३४ ई. की है। भाई मनी सिंघ जी चाहते थे कि इस वर्ष सभी सिक्ख मिल कर श्री अमृतसर साहिब में दीवाली वाले दिन बंदी छोड़ दिवस मनाएं। समय का शासक ज़करिया ख़ान लाहौर का गवर्नर था। भाई मनी सिंघ जी यह सुनिश्चित करने के लिए कि आने-जाने वाले किसी सिक्ख को कोई मुश्किल न आए, ज़करिया ख़ान से बात कर लेना चाहते थे। अनुमति दिए जाने के बदले हाकिम की तरफ से मोहरों की माँग की जाती है, जिसे स्वीकार कर लिया जाता है।

दूसरी तरफ, ज़करिया ख़ान और दीवान लखपत राय अपने मंसूबे के अनुसार श्री अमृतसर साहिब में एकत्र होने वाली सिक्ख संगत को घेर कर मारने की साजिश रचते हैं, जिसका पता भाई मनी सिंघ जी को समय से पहले चल जाता है। बचाव हेतु वे सिक्ख संगत को पहले ही आगाह कर देते हैं। इस कारण बहुत कम सिक्ख संगत ही वहाँ पहुँचती है।

दीवाली के पश्चात ज़करिया ख़ान पैसों की माँग करता है। सिक्ख संगत का जलसा न होने के कारण पैसों का बंदोबस्त न हो सका। सारी स्थिति भाई मनी सिंघ जी ने ज़करिया ख़ान को बता दी। हाकिम यह जान कर चिड़ गया। एक तो वह सिक्खों को अपनी योजना के अनुसार मारने में असफल रहा, दूसरा उसे मुँह माँगे पैसे भी न मिले। फलस्वरूप, भाई मनी सिंघ जी को गिरफ़्तार कर लाने का हुक्म सुना दिया गया। उन्हें पकड़ कर लाहौर लाया गया। काज़ी ने शरीयत के अनुसार सज़ा सुनाते हुए बंद-बंद काट कर शहीद करने के लिए कहा।

भाई मनी सिंघ जी को नख़ास चौक, लाहौर में विशाल जनसमूह के सामने शहीद किया

गया। चित्रकार सरदार किरपाल सिंघ ने उसी के अनुरूप चित्र का वातावरण बनाया है। जगह खुले आसमान वाली है। भाई मनी सिंघ जी पालथी मारे बैठे हैं। सिर पर केशों का बड़ा जूड़ा है और खुली दाढ़ी है। शरीर पर कोई वस्त्र नहीं, मात्र कछहिरा पहने हुए हैं। उनके निकट दाहिनी तरफ जल्लाद घुटनों के बल बैठा है, जिसके दाहिने हाथ में टोका (बाँका) है और उसने अपने बायें हाथ से भाई मनी सिंघ जी की दाहिनी बाज़ू को कलाई से कस कर पकड़ा हुआ है। जल्लाद के टोका थामे हाथ की पकड़ देखने में उतनी मज़बूत नहीं लगती जितनी पकड़ी हुई बाज़ू वाले हाथ की महसूस हो रही है।

निकट-निरीक्षण के द्वारा भेद स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि जल्लाद की बायीं बाज़ू की मांसपेशियों में खिंचाव है। उसे अंदर ही अंदर डर है कि कहीं मृत्यु के भय से भाई मनी सिंघ जी अपनी बाज़ू पीछे न खींच लें।

समय तनाव भरपूर प्रतीत होता है, परन्तु है नहीं, क्योंकि दोनों में तकरार नहीं। अगर मारने वाला तैयार है तो मरने वाला उससे अधिक तैयारी में है। मरने वाले की तरफ से कहा जा रहा है कि जल्लाद हुक्म की मूल भावना को समझने में असमर्थ है, क्योंकि वह बंद-बंद काटने के आदेश को कलाई से काटना समझता है। चित्र में दोनों पक्ष बिलकुल पास-पास हैं। आँखों में आँखें डाल मरने वाला, मारने वाले को अपनी बात समझा रहा है कि 'बंद-बंद काटने' का क्या अर्थ होता है, जिसे सुन घुटनों के बल बैठा जल्लाद हैरान रह जाता है, क्योंकि मरने वाला तय कर रहा है कि उसे कैसे मारा जाये। दूसरे अर्थों में, काज़ी के फरमान को जल्लाद ने नहीं समझा, बल्कि भाई जी ने समझा है। चित्र में दो ही किरदार हैं, जो अर्धनग्न अवस्था में हैं। दोनों आमने-सामने हैं। जल्लाद का रंग भूरा गहरा है। चेहरे पर कटी हुई दाढ़ी और गहरी आँखें उसे डरावना बनाती हैं। उसका सामना उसके बिलकुल विपरीत चेहरे वाले के साथ हो रहा है।

दृश्य 'कार्य' शुरू होने से बिलकुल पहले का है, बंद-बंद काटते हुए का नहीं। लहू से रहित दिखाई दे रहा लकड़ी का गोल टुकड़ा (जिस पर भाई जी का हाथ टिकाया हुआ है) आने वाले पल में लहू से सन जायेगा और उसका चौगिर्दा मांस आदि के छोटे-बड़े टुकड़ों के साथ भर जायेगा। वह मंजर दर्दनाक होगा। इसका संकेत चित्र-संरचना में उपस्थित है। इसी को आधार बना कर आगे चलें तो दाहिनी तरफ खड़े बंदी सिंघों के प्रति काज़ी और जल्लादों का व्यवहार भाई मनी सिंघ जी से भिन्न होने वाला नहीं।

हुक्म सुनाने वाला काज़ी जल्लाद के बिलकुल पीछे खड़ा है। उसका ख़ास अंदाज़ दूसरों से भिन्न है। टांगें फैलाए खड़े काज़ी की बगल में कुरान है। दूसरे हाथ की हरकत के साथ वह अपने शब्दों को ज़ोरदार हाथ के संकेत द्वारा समझा रहा है। इसके गले में खुला चोगा, सलवार और पैरों में जूती है। सिर पर कुल्लेदार पगड़ी, चेहरे पर बड़ी-बड़ी आँखें और कटी हुई मेहंदी रंग की दाढ़ी है। इसके गले में पहनी हुई तसबीह इसकी सामाजिक व राजसी पदवी की तरफ इशारा करती है।

वह धार्मिक है, परन्तु एक वर्ग का। उसकी कार्य-शैली न्याय देने वाली नहीं बल्कि अपने विरोधी का जीवन छीनने वाली है। काज़ी की शारीरिक भाषा ताकत के बल पर तुरंत निर्णय देने की दृढ़ता प्रकट करती दिखाई देती है। काज़ी और जल्लाद के अलावा लम्बे-चौड़े हथियारों से लैस सिपाही सुरक्षा के तौर पर खड़ा है। उसकी पीठ दर्शकों की तरफ है। ज़ाहिर है कि हाकिम पक्ष का कारिंदा होने के कारण वह भी दयावान नहीं हो सकता।

काज़ी के पीछे छोटा-सा हिंदू-मुसलमानों के दर्शकों का समूह है। उनके हाव-भाव साधारण नहीं हैं। ये सभी जन अर्धनग्न अवस्था में खड़े, बंद-बंद काटे जाने वाले को देखने आए हैं। परन्तु, जो देखने को मिलेगा वह खतरनाक और भयभीत करने वाला होगा। ये लोग भी कोमल हृदय, सभ्याचारक प्रतीत नहीं हो रहे।

भाई मनी सिंघ जी को चौराहे में बैठा कर शहीद किया जाता है। इससे पहले वे कैदी के तौर पर किले में रखे गए थे। उसी इमारत का विशाल हिस्सा चित्र में दृष्टमान है।

दरवाज़े की मेहराब की बाहरी तरफ भाई मनी सिंघ जी को बैठा कर आम लोगों के सामने उनका बंद-बंद काटा जाना है। देखने आए लोगों का होना या न होना एक समान है, क्योंकि वे कुछ करने से असमर्थ हैं। सत्ताधारी पक्ष द्वारा दी जा रही मौत के ढंग ने उन्हें मानों पथरीला बना दिया है।

भाई मनी सिंघ जी का शरीर गठीला और इकहरा है। वे कई युद्धों के योद्धा रह चुके हैं। सफ़ेद केश और दाढ़ी, उनके आकर्षण को बढ़ाते है। वे ज़मीन पर ही पालथी मारे बैठे हुए हैं। कोई अतिरिक्ति शारीरिक हरकत नज़र नहीं आ रही।

युद्ध-भूमि में भाई मनी सिंघ जी धर्म-रक्षा हेतु लड़ते रहे और इस बार धर्म की रक्षा हेतु ख़ुद को शहीद करवा रहे हैं। युद्ध-भूमि में दोनों पक्ष हथियारों से लैस होते थे। अब एक पक्ष के पास हथियार है, जबकि दूसरे के पास सब्र, संतोष, शान्ति और सहन-शक्ति है।

खुली जगह पर जो कुछ हो रहा होगा, वह

आश्चर्यजनक होगा, तभी चित्रानुसार हर किरदार की नज़र भाई मनी सिंघ जी पर टिकी हुई है। मारने वाले तो नित्य मरते रहते हैं। यहाँ भी मारना और मरना ही है, परन्तु कारण विलक्षण है, क्योंकि मारने वाले ने प्रचलित दंग से अलग अंदाज़ अपनाया है और उसे मरने वाले ने और सूक्ष्मता प्रदान की है।

भीड़ का अपना किरदार होता है। वह किधर चलेगी, इसकी डोर उसे गतिशीलता प्रदान करने वाले के हाथ होती है। इस चित्र में भीड़ न तो घनी है और न ही उसे कोई चलाने वाला है। दर्शक रूप में जो चार-छ: लोग हैं, वे भी साधारण प्रतीत होते हैं। कह सकते हैं कि इनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। सम्बन्ध तो भाई मनी सिंघ जी के साथ भी नहीं होगा, मगर देखने ही चले आए प्रतीत होते हैं। वे मुजरिम के हिमायती नहीं, हमदर्द भी नहीं, हमख्याली होना तो दूर की बात है। इतना अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि सारा कुछ देखने के बाद ये लोग अन्य लोगों को जाकर बताएंगे। ऐसे बोल ही 'लोक इतिहास' का आधार बनते हैं।

इमारती मेहराब के नीचे चार सिंघों का समूह है, जिनके तन पर दसतार, चोगा, और कछहिरा है। उन्होंने गातरा-कृपाण भी पहनी हुई है। सिंघ भाई मनी सिंघ जी के हिमायती, हमख्याली, हमदर्द हैं। निश्चित है कि अगली बारी इनमें से ही किसी एक की होगी।

गुरु साहिबान ने भक्ति और शक्ति के संयोग को विकसित किया है। गुरबाणी भी ऐसे व्यक्ति को ही आदर्श व्यक्ति स्वीकार करती है। भाई मनी सिंघ जी ऐसे ही व्यक्ति हैं। चित्रकार सरदार किरपाल सिंघ कैनवस पर भाई मनी सिंघ जी को उसी रूप में रंगता है।

भाई मनी सिंघ जी का समूचा जीवन आर्दश जीवन रहा है। चित्रकार द्वारा भाई मनी सिंघ जी के शरीर को उज्जवलता प्रदान करने हेतु एक युक्ति का प्रयोग किया है। मेहराब वाले स्थान पर आ रही लौ भाई मनी सिंघ जी की पीठ को छूती हुई चित्र के दूसरी तरफ आगे निकल जाती है या धीमी पड़ जाती है। इस प्रकार यह लौ भाई जी के शरीर को उज्जवल कर देती है। प्रकाश का सम्बन्ध ऊर्जा के साथ भी है। ऊर्जा में ही जीवन होता है।

# शहीद भाई तारू सिंघ जी

*–डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

विश्व का इतिहास साक्षी है कि सच्चाई, न्याय, धर्म, मानवता और मानव के सम्मान व स्वतंत्रता हेतु सिक्खों ने बहुत संघर्ष किया है, असंख्य कुर्बानियां दी हैं। पूरी १८वीं शती तो सिक्खों के लिए कड़ी परीक्षा की शती रही है। मुग़ल, दुर्रानी, ईरानी एवं अफगानी उस वक्त के पंजाब में स्वयं को मज़बूत करने में लगे हुए थे। इन सबके विरुद्ध सिक्ख जूझ रहे थे, संघर्ष कर रहे थे, देश को आज़ाद करवाने तथा सभी लोगों के लिए समानाधिकार प्राप्त करने हेतु कुर्बानियां दे रहे थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के पश्चात् भी अनेक बार सिक्खों का कत्लेआम हुआ। उन्हें गिरफ्तार कर, घोर यातनाएं देकर इसलिए शहीद किया गया, क्योंकि वे सिक्ख थे, जंगजू थे, गुरु साहिबान द्वारा दिखाए गए सत्य, हक व न्याय के रास्ते पर चलने वाले थे। सच्चे सिक्ख कभी डगमगाते नहीं हैं और सत्य के मार्ग पर चलना कभी छोड़ते नहीं हैं। ऐसे ही सच्चे व निर्भीक सिक्ख थे— शहीद भाई तारू सिंघ जी। उनका शहीदी साका कौम के बच्चे-बच्चे की जुबान पर है।

भाई तारू सिंघ जी पंजाब के माझा क्षेत्र के गांव पूहला के निवासी थे। कृषि-कार्य करते थे तथा नाम-सुमिरन कर धैर्यपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। आने-जाने वाले खालसा जंगजुओं की सेवा करते, रात्रि-विश्राम हेतु उन्हें जगह देते और खालसा के दर्शन कर अति प्रसन्न होते। जब पूरी सिक्ख कौम को ही 'कानून के विरुद्ध' घोषित कर दिया गया था तथा सरकारी तौर पर एलान कर दिया गया था कि किसी सिक्ख को जिंदा या मुर्दा लाने वाले को इनाम दिया जाएगा, ऐसे में सिक्खों का खुलेआम रहना कठिन हो गया था। एक-एक सिक्ख के सिर का मूल्य लगा दिया गया था। इस सरकारी फरमान के साथ कि सिक्खों को शरण (पनाह) देने या रसद-पानी देने वाले को कड़ी सज़ा मिलेगी, और भी अधिक मुश्किल पैदा हो गई थी। साधारण मददगार भी मदद

**बी-एस-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०*

करने से डरने लगे थे। किंतु, भाई तारू सिंघ जी ने जंगलों में भटक रहे सिक्खों की सेवा करना अपना परम कर्त्तव्य बना लिया। पूरा गांव उनका सम्मान करता था।

एक मुखबिर खत्री (क्षत्रिय) भगत् निरंजनिया गद्दार निकला। उसने लाहौर के सूबेदार जकरिया खान के पास जाकर शिकायत की कि पूहला गांव में एक सिक्ख निवास करता है। उसके पास खालसा फौज़ के सिपाही तथा अन्य सिक्खों का आना-जाना लगा रहता है।

उसकी शिकायत पर तुरंत जकरिया खान ने आदेश दे दिया कि भाई तारू सिंघ जी को गिरफ़्तार कर उसके सामने पेश किया जाए।

जब शाही फ़ौज गांव में पहुंची, तब भाई तारू सिंघ जी के समर्थक लोग तथा उनके पास ठहरे कुछ सिंघ, फ़ौज का मुकाबला करने हेतु डट गए और फ़ौज को आगे बढ़ने की चेतावनी दी। भाई तारू सिंघ जी ने उन्हें रोका और कहा कि मेरी खातिर कई लोगों की जान का क्यों नुकसान करते हो? भाई साहिब की हिदायत पर सभी पीछे हट गए और शाही फ़ौज ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

लाहौर में लाकर भाई तारू सिंघ जी को जकरिया खान के सामने पेश किया गया। जकरिया खान ने पूछा, "क्या आप सिक्खों को अपने पास ठहरने के लिए जगह देते हो?"

भाई तारू सिंघ जी ने निडरतापूर्वक कहा, "मैं केवल उन्हें आश्रय ही नहीं देता, अपितु यथाशक्ति उनकी सेवा भी करता हूं। खालसा की सेवा करनी तो मैं अपना धर्म समझता हूं।"

"आज के बाद ऐसा न करने का विश्वास दिला सकते हो?" सूबेदार ने पूछा।

भाई तारू सिंघ जी ने कड़क आवाज़ में कहा, "बिलकुल नहीं! मैं अपने गुरु का सच्चा सिक्ख हूं। मेरा अपना कुछ भी नहीं है। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब मेरे गुरु का दिया हुआ है। इसे मैं खालसा की सेवा में लगा देता हूँ। खालसा की सेवा करना छोड़ना नामुमकिन है।"

भाई साहिब का निर्भीकतापूर्ण उत्तर सुनकर जकरिया खान ने काज़ियों को बुलवा लिया और उनकी राय के अनुसार आदेश दिया कि "जिस सिक्खी की बात भाई तारू सिंघ जी करते हैं उस सिक्खी को तार-तार करते हुए इनके सिर के केश काट दिए जाएं।" इस आदेश का तात्पर्य यह था कि जिस सिक्खी पर भाई तारू सिंघ जी को फख्र है, उस सिक्खी से

इन्हें पतित कर दिया जाए, वंचित कर दिया जाए।

भाई तारू सिंघ जी यह कदापि सहन नहीं कर सकते थे कि उनकी जान से भी अधिक प्यारे केशों का अपमान किया जाए। उनके नेत्र मुंद गए और उनका ध्यान अकाल पुरख के साथ जुड़ गया। अरदास की— "ऐ सच्चे पातशाह! मुझे बल प्रदान करें कि मैं अपनी सिक्खी केशों-श्वासों संग निभा सकूं।"

जब सरकारी नाई केश क़त्ल करने के लिए नज़दीक आये, तब भाई तारू सिंघ जी ने विरोध करते हुए कहा कि मैं जीते-जी तुम्हें अपने केश काटने नहीं दूंगा। तब काजी तथा जकरिया खान ने आदेश सुनाया कि भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी ही उतार दी जाए। एक मोची को बुलवाया गया और उसे कहा गया कि वह अपनी खुरपी से भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार दे। उसने भाई साहिब की खोपड़ी केशों सहित उतार दी।

तत्पश्चात् खून से लथपथ भाई तारू सिंघ जी को कई दिन तक कैदखाने में कैद कर रखा गया। सब्र व धैर्य के मुजस्समे भाई तारू सिंघ जी घोर यातनाएं व पीड़ा सहन करते हुए शहादत प्राप्त कर गए। उनसे पहले जकरिया खान भी तड़प-तड़प कर बुरी मौत मर गया।

लाहौर में दिल्ली गेट के बाहर भाई तारू सिंघ जी का अंतिम संस्कार किया गया। यह जगह लाहौर रेलवे स्टेशन के अति निकट है और यहां 'शहीद गंज गुरुद्वारा' शोभायमान है।

शहीद भाई तारू सिंघ जी का जीवन-प्रसंग प्रेरणा देता है कि केश गुरु की मोहर होते हैं। इनकी हिफ़ाजत जान से बढ़कर की जानी चाहिए। शहीद भाई तारू सिंघ जी के जीवन-प्रसंग के साथ-साथ अन्य सभी सिंघों, सिंघनियों, भुजंगियों के शहादत भरे प्रसंग को सिक्ख बच्चे-बच्चियों को पढ़ाया व सुनाया जाना चाहिए। इससे वे सिक्खी स्वरूप की देखभाल व संभाल हेतु प्रेरित होंगे। सिक्खी के लासानी और गौरवशाली इतिहास से हमें खुद को व अपने बच्चों को अवगत करवाते रहना चाहिए। सिक्खी का पूरे विश्व में प्रचार करना चाहिए। प्रत्येक सिक्ख को चरित्रता, उच्च नैतिकत्ता, ईमानदारी, न्याय, परोपकारी भावना का दूत बनना चाहिए।

# बीबी सुक्खां जी

*–डॉ. अमरजीत कौर इब्बण कलाँ**

बाबा बुड्ढा जी के वंशज ब्रह्मज्ञानी भाई गुरबखश सिंघ उर्फ भाई राम कुंवर जी की सुपुत्री बीबी सुक्खां जी थीं, जिनका विवाह नौशहरा ढाला के निवासी चौधरी महताब राय के सुपुत्र के संग हुआ था।

बाबा बुड्ढा जी के चार सुपुत्र— भाई सुधारी जी, भाई भिखारी जी, भाई महिमू जी तथा भाई भाना जी थे। भाई भाना जी का हाथ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को बाबा बुड्ढा जी ने स्वयं थमा दिया था और भाई भाना जी गुरु साहिब की हज़ूरी में समर्पित हो गए थे। भाई भाना जी के दो सुपुत्र— भाई जलाल जी और भाई सरवण जी थे। भाई सरवण जी के सुपुत्र भाई झंडा जी थे और भाई झंडा जी के दो सुपुत्र— भाई हरदित्ता जी और भाई गुरदित्ता जी थे। भाई गुरदित्ता जी श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के अंतिम काल में दिल्ली के चाँदनी चौंक में थे। वे गुरु जी की शहादत के समय आई तूफानी आँधी में वैराग्य अवस्था में लीन मजनूं टीला पहुंच कर अकाल प्रस्थान कर गए थे, जिनका अंतिम संस्कार दिल्ली के सिक्खों ने यमुना पार बाबा बुड्ढा जी के स्थान पर कर दिया था। भाई गुरदित्ता जी के सुपुत्र भाई गुरबखश सिंघ उर्फ भाई राम कुंवर जी थे।

भाई राम कुंवर जी के तीन सुपुत्र— भाई मोहन सिंघ, भाई अनूप सिंघ तथा भाई क्रिशन कुंवर जी थे और दो पुत्रियां— बीबी सुक्खां जी और बीबी धरमो जी थीं। भाई राम कुंवर जी ब्रह्मज्ञानी थे, जो लगभग समाधि में ही रहते थे। इस समय तक झंडे रामदासपुर की रियासत भी बहुत बड़ी हो चुकी थी। भाई मोहर सिंघ के समय पाँच सौ से अधिक गाँव इस रियासत में थे। कहने से भाव यह एक शाही रियासत के मालिक थे।

बीबी सुक्खां जी का रिश्ता नौशहरा ढाला के चौधरियों के घर किया। उस समय पट्टी में मुग़ल शासन था, जहाँ से नौ लाख रुपए का लगान एकत्र होता था। इसमें तीन लाख रुपए नौशहरा पंन्नूआं के चौधरी, तीन लाख रुपए झबाल के चौधरी और तीन लाख रुपए का लगान नौशहरा ढाला के सरदार अदा किया करते थे। इसी कारण पट्टी को अब तक "नौ

* *गाँव व डाक : इब्बण कलाँ, झबाल रोड, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९७८०६-३५१९७*

लक्खी पट्टी" भी कहा जाता है। ये तीनों चौधरी सौ-सौ गाँवों के मालिक थे।

नौशहरा ढाला का चौधरी साहब राय था, जो मुगलों का हितैषी था। यही चौधरी भाई तारा सिंघ वाँ तथा अन्य २२ सिंघों की शहादत का कारण बना था। ये दो भाई थे। इसका दूसरा भाई मताब राय था। साहब राय जितना दुष्ट था, मताब राय उतना ही गुरसिक्ख था। वह गुरु-घर को मानने वाला था और साथ ही मिलनसार भी था।

भाई मंगल सिंघ मामूपुरिया द्वारा लिखित ग्रंथ 'जीवन-चरित्र बाबा बुड्ढा जी' के अनुसार, जब नौशहरा ढाला से बीबी सुक्खां जी को ब्याहने के लिए बारात झंडा रामदासपुर पहुँची तो तीन दिन बारात वहाँ ठहरी। बाराती रोज़ भाई राम कुंवर जी के दर्शन करने जाते, चरण स्पर्श करते और वापस लौट आते। भाई राम कुंवर जी अपने सेवक भाई रामा से पूछने लगे— "भाई रामा! ये कौन भले लोग हैं, जो रोज़ आते हैं?" भाई रामा ने बताया कि "ये बाराती हैं, जो बीबी सुक्खां जी को ब्याहने आए हैं।" यह सुन कर भाई राम कुंवर जी ने वचन किया— "भाई रामा! (वर पक्ष के लोग) जैसा सुनते थे, वैसे ही हैं।" उन्होंने दूल्हे को अपने पास बुला कर आशीर्वाद दिया और कहा कि बीबी सुक्खां जी का परिवार बहुत बढ़े-फूलेगा। धन-सम्पदा की कभी कमी नहीं आएगी।" चौधरी मताब राय और साहब राय दोनों की हवेलियाँ थीं। साहब राय की हवेली तो सिंघों ने ही नष्ट कर दी थी। उसे उसके किए पाप की सज़ा दे दी थी, लेकिन मताब राय की हवेली स्थिर रही। फिर परिवार के बढ़ने से कुछ परिवार राजाताल और कुछ बुर्ज जा बसा। बीबी सुक्खां जी का कमरा आंखों देखने की गवाही इसी परिवार के भाई गुलजार सिंघ भरते हैं।

१७०५ ई. में झबाल के चौधरी बाबा लंगाह के भ्राता पीरो शाह के परिवार के भाई भाग सिंघ, भाई दिलबाग सिंघ श्री मुकतसर साहिब की जंग में शहीद हो गए। इनके साथ इनकी बहन माता भागो जी का पति भाई निधान सिंघ और उसका बड़ा भाई सुलतान सिंघ भी शहीद हो गया। माता भागो जी के दोनों भाई, पति और जेठ का भी निधन हो जाने के पश्चात माता भागो जी वापस न झबाल और न ही पट्टी लौटे, बल्कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ नांदेड़ पहुंच गए। माता भागो जी का देहावसान वहीं पर हुआ।

भाई भाग सिंघ की पत्नी सरदार श्याम सिंघ नारले वालों की पुत्री थी। उनका छोटा पुत्र सरदार बघेल सिंघ था। झबाल वाले चौधरियों को लाहौर सरकार ने बाग़ी करार देते हुए इनके घर ढह-ढेरी कर दिए। बीबी धरमी, बच्चे को

लेकर पहले नारले चली गई, फिर सुरक्षा के लिहाज से बीबी धरमी और सरदार बघेल सिंघ बीबी सुक्खां जी की हिफ़ाज़त में पहुंच गए। सरदार बघेल सिंघ की परवरिश बीबी सुक्खां जी ने अपना पुत्र समझ कर की। उन्हें कभी भी अकेला नहीं छोड़ा। रामदासपुरा जाते समय भी सरदार बघेल सिंघ को अपने साथ रखा। ब्रह्मज्ञानी राम कुंवर जी की आशीष सरदार बघेल सिंघ को प्राप्त हुई। जब सरदार बघेल सिंघ जवान हुआ तो बीबी सुक्खां जी ने कसेल के सरदारों की पुत्री रतन कौर के साथ उसका विवाह कर दिया।

यह सिक्ख मिसलों का समय था। बाबा शाम सिंघ का पुत्र सरदार करोड़ा सिंघ करोड़िया मिसल का प्रमुख बना। फिर करोड़िया मिसल का प्रमुख सरदार बघेल सिंघ झबालिया बना, जिसने दिल्ली के लाल किले तक विजय अभियान चलाया।

बीबी सुक्खां जी बहुत ही भक्ति-भाव वाली तथा नाम-सुमिरन में लीन रहने वाली स्त्री थीं। मैंने बीबी जी के परिवार वालों से प्रश्न किया कि "बीबी जी को 'माता' नाम से संबोधित करना उचित रहेगा।" उत्तर मिला कि उनका हुक्म था कि उन्हें 'बीबी' ही कहा जाये।

बीबी सुक्खां जी का महलनुमा घर समय अंतराल के साथ ढह-ढेरी हो गया। अब वहाँ बीबी सुक्खां जी के नाम पर गुरुद्वारा साहिब बन रहा है। इन महलों के नीचे भोरे (तहखाना) हैं, साथ ही एक छोटा कुआँ है। भोरे में पानी की व्यवस्था है। छत की गोल डाटें हैं। अब यह परिवार की मलकियत नहीं है, बल्कि पूरे गाँव की है। बीबी जी का परिवार बहुत बढ़ा-फूला है। सभी लोग देश-विदेश में बस रहे हैं और सभी रईस हैं।

बीबी नवनीत कौर पत्नी स. दविंदरपाल सिंघ भुल्लर इस परिवार की बेटी है। इसका पति विवाह से केवल चार महीने बाद से अब तक २३-२४ वर्ष से जेल में बंद है, जिसे छुड़ाने के लिए बीबी नवनीत कौर यत्नशील है।

नौशहरा ढाला, सीमावर्ती गाँव है। इसके निकट कँटीली तार लगी हुई है। बीबी सुक्खां जी का देहावासन २४ आश्विन, १८३४ बिक्रमी मुताबिक ६ अक्तूबर, १७७७ ई. को नौशहरा ढाला में ही हुआ था।

बीबी सुक्खां जी सिक्ख इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, जिन्होंने करोड़िया मिसल के सरदार बघेल सिंघ की परवरिश की, जिनका अठारहवीं सदी के मिसल काल में अहम स्थान है।

# सिक्ख परंपरा में बाज़

*–डॉ. परमवीर सिंघ**

बाज़ एक शिकारी पक्षी है, जिसे 'जुर्रा की मादीन' माना जाता है। पक्षियों की दुनिया में शक्ति और साहस का प्रतीक बाज़ चाहे अब पंजाब की धरती पर कम ही दिखाई देता है लेकिन फिर भी कहा जाता है कि सर्दियों की ऋतु में यह पंजाब की धरती पर चक्कर लगा ही जाता है और यह सिलसिला लंबे समय से बना हुआ है। बढ़ रहे वातावरण प्रदूषण के कारण भी प्रवासी पक्षियों की पंजाब की तरफ परवाज़ दिन-ब-दिन कम होती जा रही है और इसका प्रभाव बाज़ के पंजाब-आगमन पर भी स्वाभाविक नज़र आता है। पंजाब के लोगों की मानसिकता में बसे हुए इस परिंदे को पंजाब सरकार ने 'राज्य-पक्षी' का रुतबा प्रदान किया है। अंग्रेज़ सरकार के शासन-काल में पहले 'चक्कीराहा' राज्य-पक्षी था, जो कि किसानों का दोस्त समझा जाता था। यह ऐसा पक्षी था जो कि फ़सल को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े-मकौड़े खाकर फ़सल को बचाता था। १९३३ ई. में अविभक्त पंजाब की सरकार ने ''चक्कीराहा' की जगह 'बाज़' को राज्य-पक्षी का दर्जा प्रदान कर दिया था।

पंजाब शूरवीरों की धरती है, जहाँ शूरवीरता के गुण प्रदान और प्रकट करने वाली प्रत्येक वस्तु और हस्ती का समान किया जाता है। यहाँ की परंपरा में वे पशु, पक्षी और वृक्ष अपने आप आ जाते हैं जिनमें से शूरवीरता के गुण सामने आते हैं। इसी दृष्टि से पंजाब के साहित्य और परंपरा में बाज़ का ज़िक्र देखने को मिलता है, जैसे ''भला बटेरे नूँ बाज़ कद जाण दिंदा है!'' ''बाज़ वांग टुट्ट के पै जाणा'', 'बाज़ वांग झपटना'', ''बाज़ वरगी अख'', काल अचानक मारसी जिउं तित्र नूँ बाज़।'' बाज़ के गुणों के कारण इसे गरुड़, शिकरा, सीचाना, कुही, चरग़, बहिरी, बेसर, लगड़ आदि शिकारी पक्षियों का राजा माना जाता है। गुलाबचशम जाति से सबन्धित इस पक्षी का ज़िक्र करते हुए भाई कान्ह सिंघ नाभा बताते हैं कि ''यह जुर्रा का मादीन है। इसका कद जुर्रा से बड़ा होता है। यह ठंडे देशों से पकड़ कर पंजाब में लाया जाता है। यह यहाँ पर अंडे नहीं देता। दस-बारह वर्ष यह

**सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला-१४७००२, फोन : ९९७२०-७४३२२*

शिकार का काम देता है। गर्मियों में इसे ठंडी जगह पर बैठाते हैं। यह पुराने पंख निकाल कर नये बदलता है। यह तीतर, मुरग़ाबी और सहे का शिकार खूब करता है। पुराने समय में अमीर लोग बाज़ को अपने हाथ पर रखते और शिकार खेलते थे।

बाज़ को फुर्ती, साहस, तेज़ निगाह आदि का चिह्न माना जाता है। आसमान पर उड़ता हुआ भी यह ज़मीन पर अपने शिकार को देख लेता है और फिर इतनी फुर्ती के साथ उस पर हमला करता है कि उसे भागने का मौका नहीं देता। शिकार होने वाले को यह पता ही नहीं चलता कि उसके साथ क्या हुआ है। भक्त शेख फ़रीद जी अल्लाह द्वारा भेजे गए मौत के फ़रिश्ते के साथ इस पक्षी की तुलना करते हुए कहते हैं :

*फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥*
*केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८३)*

बाज़ बादशाहों और अमीरों का मनपसंद पक्षी माना जाता है। ये लोग शौक से बाज़ को पालते हैं। प्राचीन समय में जब ये लोग शिकार करने के लिए जाते थे तो इसे भी अपने साथ ले जाते थे। यह माना जाता है कि चाहे बाज़ मांसाहारी जीव है, परन्तु यह मरा हुआ जीव नहीं खाता और अपने भोजन के लिए यह ख़ुद शिकार करता है। मुग़ल बादशाहों की शान समझा जाने वाला यह पक्षी गुरु साहिबान के दरबार का हिस्सा भी बन गया था। छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब कृपाण, कलगी, घोड़ा, निशान आदि शाही चिह्न धारण कर आम लोगों को ऊँचा उठाने का कार्य आरंभ किया तो बाज़ भी उनमें शामिल हो गया था। श्री अमृतसर साहिब में शाही फौज के साथ गुरु जी के प्रथम युद्ध का कारण भी शाही बाज़ ही बना था। सिक्ख, गुरु जी को सच्चा पातशाह कहते थे और उन्हें शाही समान वाली वस्तुएँ भेंट किया करते थे। बाज़ भी उनमें से एक था। एक घटना का ज़िक्र अक्सर किया जाता है कि जब गुरु जी करतारपुर में मौजूद थे तो कंधार से गुरु साहिब के दर्शन करने के लिए एक सौदागर काबुली मल्ल आया। उसने गुरु जी को जो वस्तुएँ भेंट की, उनमें शस्त्र, वस्त्र, कलगी और बिदख़शां का एक श्वेत बाज़ भी शामिल था।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय बाज़ विशेष रूप से सामने आता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का इस पक्षी के साथ विशेष प्रेम था, इसी कारण गुरु जी को समान सहित 'बाजां वाला' कह कर भी संबोधित किया जाता है। सिक्ख परंपरा में गुरु जी के श्वेत बाज़ का ज़िक्र मिलता है। श्वेत रंग

शान्ति, मित्रता और निर्मलता का प्रतीक है, मगर जब इस रंग वाला बाज़ गुरु साहिब का स्पर्श प्राप्त करता है तो शूरवीरता और स्फूर्ति के साथ-साथ स्वाभिमान के चिह्न के रूप में प्रकट होता है। गुरु जी के श्वेत बाज़ का ज़िक्र कवियों की रचनाओं में अक्सर देखने को मिलता है :

हुंदे किवें चिड़े बाज,
गिद्दड़ बबर शेर,
चिट्टे बाजां वाला जे ना जग विच आउंदा!

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शिकार खेलते समय बाज़ को अपने साथ लेकर जाया करते थे। जब वे शस्त्र धारण कर घोड़े पर सवार होकर प्रस्थान करते तो बाज़ उनकी शोभा और शान में वृद्धि करता था, जिसका वर्णन करते हुए ज्ञानी गिआन सिंघ बताते हैं :

कर पर बाज धारि होइ बाज पै सवार,
नित ही शिकार गुरु इम ही कराहि हैं॥

बाज़ अपनी फुर्ती और शिकारी स्वभाव के कारण प्रसिद्ध है। यह अपना स्वभाव नहीं बदलता। जब बादशाह इसका प्रयोग अपनी शक्ति के प्रतीक के रूप में करता है तो इसका यह तात्पर्य लिया जाता है कि इसके सामने समूची प्रजा चिड़ियों-बटेरों की भांति है, जो कि बादशाह का मुकाबला करने के असमर्थ है। दरबारी शक्ति प्रजा पर कोई भी ज़ुल्म करे, उसे सहन करने में ही भलाई समझी जाती रही है। बादशाह की शक्ति के ऐसे संदेश को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बदलने का सफल यत्न किया। गुरु जी चिड़िया-बटेरे समझी जाने वाली प्रजा को ऐसी शक्ति प्रदान करते हैं कि वह 'ज़ुल्मी बाज़' का नाश करने के योग्य हो जाती है। आम लोगों को ज़ुल्म के विरुद्ध सचेत करने और बल पैदा करने के लिए भी गुरु जी ने बाज़ को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद बाज़ सिक्खों के आकर्षण का केंद्र बना रहा। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के शूरवीर साथियों में एक भाई बाज सिंघ भी मौजूद था, जिसकी हिमत और फुर्ती की तुलना बाज़ के साथ की जाती थी। सरहिन्द पर विजय प्राप्त कर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इसे वहाँ का हाकिम नियुक्त कर दिया था। गुरदास नंगल के युद्ध के पश्चात् जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर और उसके साथियों को पकड़ कर दिल्ली ले जाया गया तो कुछ चुनिंदा सिक्खों से पहले उनके समूह साथियों को शहीद कर दिया गया था। 'महिमा प्रकाश' का कर्ता लिखता है कि बादशाह फर्रुसियर भाई बाज सिंघ के साहस से बहुत प्रभावित था। बादशाह ने उसे दरबार में बुलाया और कहा कि ''माना कि तू बड़ा शक्तिशाली है, मगर अब कुछ नहीं कर

सकता।'' भाई बाज सिंघ ने कहा, ''मेरी बेड़ियां खोल कर देख, अभी पता चल जायेगा।'' जब उसके पैरों की बेड़ियां खोली गईं तो बाज़ की भांति झपट कर उसने हाथ की हथकड़ियों से ही दो-तीन जवानों को गिराया। दरबार में उपस्थित मुग़ल सिपाहियों ने उसे मौके पर ही शहीद कर दिया था।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बाद मिसलों के समय के दौरान महाराजा रणजीत सिंघ ने लाहौर पर विजय प्राप्त कर अपना शासन स्थापित कर लिया था। कहा जाता है कि १८०५ ई. में इन्दौर का मराठा सरदार यशवंत राव होलकर महाराजा रणजीत सिंघ से सहायता मांगने के लिए पंजाब आया तो लार्ड लेक इसका पीछा कर रहा था। उस समय हुई संधि में महाराजा रणजीत सिंघ की तरफ से सरदार फतिह सिंघ आहलूवालिया ने दस्तख़त किये थे। जब लार्ड लेक वापस लौटने लगा तो ख़ुशी से उसने आहलूवालिया सरदार को एक चितरा नज़र किया था। आहलूवालिया सरदार ने वापसी तोहफ़े के रूप में उसे एक बाज़ भेंट किया था, जो कि इस बात का प्रतीक था कि ख़ालसा अपने राज की सुरक्षा के लिए सचेत है।

सिक्ख बाज़ को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के संदेश-वाहक के रूप में भी देखते हैं। इसकी एक मिसाल गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा देखने गए अंग्रेज़ पादरी सी. एफ. एंडर्यूज ने प्रेस को भेजे अपने एक बयान में भी पेश की है। वह बताता है कि जब वह श्री अमृतसर साहिब से तांगे में बैठ कर गुरुद्वारा गुरु का बाग़ की तरफ जा रहा था तो रास्ते में दो सिक्ख नौजवान आसमान में उड़ते हुए एक पक्षी की तरफ देख रहे थे। तांगे से उतर कर सभी मुसाफ़िर उनकी तरफ देखने लगे। बताया गया कि यह सुनहरी बाज़ है और जब पुलिस द्वारा जत्थे की मार-कुटाई की जाती है तो यह यहाँ से उड़ कर रोज़ाना श्री दरबार साहिब (श्री अमृतसर साहिब) चला जाता है। देखने वालों के चेहरे पर ख़ुशी का प्रकटावा अकालियों की धार्मिक दृढ़ता के प्रतीक को बयान करता था।''

इसी प्रकार जून, १९८४ ई. के साके के समय जब पंजाब के बहुत-से गुरुधामों पर हमला हुआ तो कुछ गुरुधामों में संगत ने बाज़ के दर्शन किये थे। पटियाला का गुरुद्वारा दूख निवारण साहिब भी उनमें शामिल था। जब यह ख़बर फैली कि गुरुद्वारा साहिब में बाज़ आया है तो संगत उसके दर्शन करने के लिए उमड़ पड़ी। संगत बाज़ के दर्शन कर रही थी और उसे गुरु जी द्वारा संकट-काल में चढ़दी कला में रहने के संदेश के रूप में देख रही थी।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए हमले का

सिक्खों के मन में बहुत आक्रोश था और वे देश की प्रधानमंत्री के साथ सख़्त नाराज़ थे। प्रधानमंत्री के दो अंगरक्षकों ने उसका कत्ल कर दिया, जिसके निष्कर्ष के तौर पर पकड़े गए सिंघों में स. बलबीर सिंघ भी शामिल था। प्रधानमंत्री को कत्ल करने के प्रेरक के तौर पर स. बलबीर सिंघ के बयान पर आधारित ३ अगस्त, १९८८ ई. को जो फ़ैसला आया, उसमें लिखा गया कि साका नीला तारा के दोषी प्रधानमंत्री को मारने की योजना बलबीर सिंघ ने बनाई थी और उसने इस सबंध में स. बेअंत सिंघ और स. सतवंत सिंघ को भड़काया था। सितंबर, १९८४ ई. के प्रथम सप्ताह में जब एक बाज़ प्रधानमंत्री निवास के नज़दीक एक वृक्ष पर आकर बैठा तो स. बलबीर सिंघ की नज़र उस पर पड़ी। उसने स. बेअंत सिंघ को भी यह दृश्य देखने के लिए बुलाया। दोनों इस बात पर सहमत हो गए कि यह बाज़ दशमेश पिता का यह संदेश लेकर आया है कि घल्लूघारा (साका) जून १९८४ ई. का बदला लिया जाये। दोनों ने वहीं पर अरदास कर दी थी।

वर्तमान समय में पंजाब में बाज़ बहुत कम देखने को मिलते हैं, परन्तु नवंबर, २०२० ई. में जब किसानों ने दिल्ली की सीमाओं पर मोर्चा लगाया तो दिल्ली पुलिस ने उनका रास्ता रोकने के लिए कठोर प्रतिबंध लगा दिए थे। किसानों के मुख्य पंडाल और सरकारी प्रतिबंधों के मध्य निहंग सिंघों ने अपनी छावनी लगा ली। उनके पास घोड़े, बाज और शस्त्र मौजूद थे। बाज़ एक तंबू के ऊपर बैठा रहता था, जिसे देखने और तस्वीर खिचवाने वालों की भीड़ हमेशा बनी रहती थी। निहंग सिंघ दशमेश पिता के इस प्रतीक-पक्षी के बारे में संगत को जानकारी प्रदान करते थे।

बाज़ सिक्ख मानसिकता में प्रवेश कर गया है और वे इसकी हिमत, दृढ़ता और स्वतंत्रता के गुणों से बहुत प्रभावित हैं। सिक्खों द्वारा शस्त्रों पर शेर या बाज़ का चिह्न बनवाया जाता है, जो कि गौरवता का प्रतीक माना जाता है। गुरुद्वारा साहिबान में बाज़ के चित्रों या चिह्नों के दर्शन चढ़दी कला में रह कर ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जूझते रहने की प्रेरणा पैदा करते हैं।

# श्री अमृतसर साहिब के ऐतिहासिक बुंगे

–स. हरविंदर सिंघ खालसा*

श्री अमृतसर साहिब प्रसिद्ध शहर है। इस नगर का प्रारंभिक नाम 'गुरु का चक्क' था। इसे 'रामदासपुर' भी कहा जाता रहा है। श्री गुरु रामदास जी द्वारा श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की स्थापना की वजह से श्री अमृतसर साहिब विश्व भर में प्रसिद्ध है। श्री गुरु रामदास जी ने ही यहाँ बावन प्रकार के व्यवसायी लोगों को बसा कर शहर आबाद किया। इसके बाद इस कार्य को सम्पूर्ण करने में गुरु जी की कृपा समझ कर मुसाफ़िरों के आराम के लिए सिक्ख सरदारों ने सरोवर के इर्द-गिर्द बड़े सुंदर मकान बनवाए। ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार सिक्ख सरदारों ने सरोवर के आस-पास जो सुंदर मकान बनवाए उनका नाम 'बुंगे' (बुंगा) रखा गया।

'बुंगा' शब्द फ़ारसी 'बिनगाह' से बना है, जिसका अर्थ है-रिहायशी जगह, ठिकाना या निवास। जिस समय श्री गुरु रामदास जी ने सरोवर की खुदाई शुरू करवाई तो सरोवर में से निकली सारी मिट्टी परिक्रमा से बाहर चारों तरफ डलवा दी। कार-सेवा दर्शन करने आई संगत की रिहायश और लंगर के लिए गुरु साहिब ने सरोवर की परिक्रमा के बाहर चारों तरफ छप्पर और मकान बनवाए। बाद में छप्परों की जगह कुछ कच्चे मकान बनवाए और फिर समय के साथ-साथ कच्चे मकानों की जगह पक्के मकान बन गए, जिनमें समय-समय पर आयोजित किये जाते समागम के समय संगत के लिए लंगर और आराम का प्रबंध होता रहा। जब अहमद शाह अब्दाली ने श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को बारूद से उड़ा दिया, सरोवर मिट्टी से भर दिया तो ये मकान भी गिरा दिए गए।

सिक्ख मिसलों के समय जब श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की इमारत का नये सिरे से निर्माण किया गया और सरोवर की मुरम्मत की गई तो मिसलों के मुखिया ने बुंगों की नयी पक्की इमारतें बनाना आरंभ कीं। सिक्ख सरदारों ने अपने निवास श्री दरबार साहिब की परिक्रमा के इर्द-गिर्द बनाए। प्रत्येक बुंगे का नाम मिसल के नाम या सरदार के नाम पर था। इसके अलावा किसी साधु-संत या अन्य व्यक्ति ने अपना ठिकाना बनाया तो वह उसके या उसके गाँव के नाम पर लोकप्रिय होता गया। ज्ञानियों के बुंगों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का शुद्ध पाठ, अर्थ और व्याख्या का प्रशिक्षण दिया जाता था। रागियों के बुंगों में कीर्तन की शिक्षा

* ऐ-२४, करतार कालौनी, गोनिआणा रोड, बठिंडा–१४१००१, फोन : ९८१५५-३३७२५

दी जाती थी और अकालियों के बुंगों में शस्त्र-विद्या का अभ्यास करवाया जाता था।

प्रत्येक बुंगे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता था। प्रत्येक बुंगे का एक मुख्य सेवादार होता था, जिसे 'बुंगई' कहा जाता था। नित्तनेम के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करने के साथ-साथ बुंगे की सफ़ाई, संगत की सेवा-संभाल और संगत की ज़रूरत के मुताबिक सहायता करनी इसकी मुख्य ज़िम्मेदारी थी।

ज्ञानी गिआन सिंघ द्वारा जानकारी के अनुसार कुछ बुंगों का विवरण इस प्रकार है :

**१. बुंगा जल्लियां वाला :** यह बुंगा तीन-मंजिला था और ११ हज़ार रुपया ख़र्च कर १८३० बिक्रमी में बनाया गया था।

**२. बुंगा शाह बादियां :** यह बुंगा तीन- मंजिला था और ८ हज़ार रुपये ख़र्च कर १८३० बिक्रमी में मुकम्मल हुआ था। इस बुंगे को संत करम सिंघ निरमले ने तैयार करवाया था।

**३. बुंगा मजीठिया :** यह बुंगा तीन-मंजिला था और ११ हज़ार ख़र्च कर १८७० बिक्रमी में बनाया गया था।

**४. बुंगा सिंघ पुरिया :** यह बुंगा दो-मंजिला था और इस बुंगे को स. बुद्ध सिंघ, स. खुशहाल सिंघ ने १८६० बिक्रमी में पाँच हज़ार रुपये ख़र्च कर बनवाया था।

**५. बुंगा सिंघ पुरिया :** यह दूसरा बुंगा स. अतर सिंघ ने १८६५ बिक्रमी में चार हज़ार रुपय ख़र्च कर बनवाया था।

**६. बुंगा गद्दो वालिया :** यह बुंगा एक-मंजिला था और १८५० बिक्रमी में बना था।

**७. बुंगा जमांदार खुशहाल सिंघ :** यह बुंगा भाई बलाका सिंघ से जगह लेकर जमांदार खुशहाल सिंघ ने १८७१ बिक्रमी में तैयार करवाया था।

**८. बुंगा घनय्या (घन्हईया ) :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८०९ बिक्रमी में ९००० रुपए ख़र्च कर बनवाया गया था। बाद में सरदार करम सिंघ ने गिरा कर नये सिरे से तैयार करवाया। सरदार करम सिंघ, महाराजा शेर सिंह का धर्म-पुत्र था।

**९. बुंगा राजा धिआन सिंघ :** यह बुंगा पहले अटारी वाले सरदारों का था, बाद में राजा धिआन सिंघ ने संभाल लिया। राजा धिआन सिंघ ने १८८१ बिक्रमी में ६५४७ रुपए ख़र्च कर पूरी तरह से तैयार करवाया। यह बुंगा भी तीन मंजिला था।

**१०. बुंगा बारांदरी वाला :** यह बारांदरी के साथ दो-मंजिला बुंगा था, जो १८२७ बिक्रम में ४ हज़ार रुपया ख़र्च कर बनाया गया था। यह नकई सरदारों का निवास-स्थान था।

**१२. बुंगा जोध सिंघ छापा वाला :** यह बुंगा एक-मंजिला था और इस बुंगे को २५०० रुपया ख़र्च कर १८५० बिक्रमी में तैयार किया गया था।

**१३. बुंगा बाग सिंघ शहीद :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८२२ बिक्रमी में तैयार करवाया

गया था।

**१४. बुंगा देवा सिंघ शहीद :** यह बुंगा भी दो मंजिला था और १८२२ बिक्रमी में तैयार हुआ था। बुंगा भाग सिंघ शहीद और बुंगा देवा सिंघ शहीद — दोनों बुंगों पर ख़र्च ७ हज़ार रुपये आया था।

**१५. बुंगा रागी धनपति सिंघ :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८३० बिक्रमी में तैयार करवाया गया था।

**१६. बुंगा जरनैल मीहां सिंघ :** यह बुंगा चार मंजिला था और १८७१ बिक्रमी में तैयार हुआ। इस बुंगे पर ९ हज़ार रुपया ख़र्च आया।

**१७. बुंगा भाई गुरदास सिंघ जी :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८६१ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**१८. बुंगा अभै सिंघ हुकमनामियां :** यह बुंगा भी दो मंजिला था और १८५८ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**१९. बुंगा नकईआं वाला :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८४७ बिक्रमी में तैयार हुआ

**२०. बुंगा बरकी वाले सरदारां दा :** यह बुंगा दो-मंजिला था और सरदार अनोख सिंघ ने १८३६ बिक्रमी में तैयार करवाया था।

**२१. बुंगा घड़ियालियां वाला :** यह बुंगा तीन-मंजिला था और १८४१ बिक्रमी में तैयार हुआ था। इस बुंगे के नाम १६८० रुपए की जागीर थी और यहाँ घड़ियाल (बड़ा घंटा) बजाया जाता था।

**२२. बुंगा झंडे वाला :** यह बुंगा तीन- मंजिला था और १८४० बिक्रमी में तैयार हुआ था। इसके सम्मुख बावा प्रीतम दास ने लकड़ी का एक झंडा खड़ा किया था, जो १८८० बिक्रमी में टूट जाने पर सरदार देसा सिंघ मजीठिया ने लोहे का बनवा कर ऊपर सुनहरी काम करवा कर खड़ा कर दिया जो १८९८ बिक्रमी में अपने आप टूट जाने के कारण फिर सरदार लहिणा सिंघ मजीठिया ने मरम्मत करवा कर खड़ा कर दिया था। दूसरा झंडा, जिस पर बहुत सोना चढ़ा हुआ था, उसे महाराजा शेर सिंघ ने गद्दी पर शोभित होते समय बनवाया था।

**२३. बुंगा चमारी वाला :** यह बुंगा चमारी गाँव वाले सरदार हरनाम सिंघ ने १८४१ बिक्रमी में तैयार करवाया था। यह बुंगा दो-मंजिला था। स. हरनाम सिंघ ने यह बुंगा ज्ञानी संत सिंघ को अरदास करवा दिया था।

**२४. बुंगा खड़ूरियां :** यह दो मंजिला बुंगा त्रेहण बावा लोगों ने १८४० बिक्रमी में तैयार करवाया था।

**२५. बुंगा सियालकोटियां :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८५० बिक्रमी में तैयार हुआ

**२६. बुंगा गोइंदवालियां :** यह बुंगा एक मंजिला था और १८५० बिक्रमी में तैयार हुआ था। पहले यह बुंगा भल्ला बावा लोगों के पास था।

**२७. बुंगा चीचे वाले सरदारां दा :** यह बुंगा दो-मंजिला था और १८५६ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**२८. बुंगा शुकरचक्किया सरदारां दा :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८३८ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**उत्तरी दिशा में स्थित बुंगे :**

**२९. बुंगा लाडवा वाले सरदारां दा :** यह बुंगा

घंटा घर वाली जगह पर था और लाडवा वाले सरदारों ने १९२४ बिक्रमी में बनवाया था। इस बुंगे पर एक लाख रुपया ख़र्च हुआ था।

**३०. बुंगा सोढियां :** यह दो-मंजिला बुंगा सोढी केसर सिंघ अनन्दपुरीए ने १८५० बिक्रमी में बनवाया था।

**३१. बुंगा काहन सिंघ निरमला :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८८२ बिक्रमी में बना था। इसे टूटी वाला बुंगा भी कहते थे

**३२. बुंगा रागी काहन सिंघ :** यह एक-मंजिला बुंगा १८६४ बिक्रमी में तैयार हुआ। यह बुंगा पहले हीरा सिंह तोशाखानीए के पास था और उसके बाद गुरदित्त सिंघ वैद्यराज के पास रहा।

**३३. बुंगा नूर महल्लियां :** यह दो-मंजिला बुंगा १८७० बिक्रमी में तैयार हुआ।

**३४. बुंगा आहलूवालिया :** यह तीन- मंजिला बुंगा १८६१ बिक्रमी में तैयार हुआ। इस बुंगे पर ३३००० रुपए खर्च हुए। इस बुंगे को राजा फतह सिंघ कपूरथला ने बनवाया था।

**३५. बुंगा मलवईयां :** यह चार मंजिला बुंगा मालवा क्षेत्र के महाराजाओं और सरदारों ने ४५ हज़ार रुपए खर्च कर १८३५ बिक्रमी में बनवाया था।

**३६. बुंगा भाई साहिबान कैथल :** यह दो-मंजिला बुंगा १८६३ बिक्रमी में तैयार हुआ

**३७. बुंगा जल्हे वाले सरदारां दा :** यह पाँच-मंजिला बुंगा ३४ हज़ार रुपया ख़र्च कर १८६८ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था।

**पूरब दिशा में स्थित बुंगे**

**३८. बुंगा अखाड़ा ब्रहम बूटा :** यह छ: मंजिला बुंगा महंत संतोख दास ने १८१२ बिक्रमी में बनवाया था। इस समय बुंगे की इमारतों पर ३ लाख १५ हज़ार रुपए ख़र्च हुए थे।

**३९. बुंगा राम सिंघ ज्ञानी :** यह दो-मंजिला बुंगा १८३५ बिक्रमी में ज्ञानी राम सिंघ ने बनवाया था। इस बुंगे पर १८ हज़ार रूपए खर्च हुए।

**४०. बुंगा सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया :** यह दो-मंजिला बुंगा १८१२ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था और इस बुंगे पर २ लाख ७५ हज़ार रुपया ख़र्च आया था।

**४१. बुंगा बुड़ीए वाला :** यह दो-मंजिला बुंगा १८२८ बिक्रमी में तैयार हुआ था। इस बुंगे पर ५२५०० रुपया ख़र्च हुआ था।

**४२. बुंगा जेठू वालिया :** यह दो-मंजिला बुंगा १८३५ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**४३. बुंगा मज़हबी सिक्खों का :** यह एक मंजिला बुंगा १८३४ बिक्रमी में तैयार हुआ

**४४. बुंगा भाई वसती राम :** यह तीन- मंजिला बुंगा १८७० बिक्रमी में बना था। इस बुंगे में एक सरदख़ाना भी था और दीवाली के समय यहाँ आतिशबाजी चलती थी।

**४५. बुंगा जवाला सिंघ भड़ाणियां :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८६५ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**४६. बुंगा संत जोगा सिंघ निरमला :** यह तीन-

मंजिला बुंगा १८०७ बिक्रमी में बनवाया गया था। इस बुंगे पर ५२८०० रुपया खर्च हुआ था।

**४७. बुंगा टेक सिंघ वाला :** यह दो-मंजिला बुंगा १८६० बिक्रमी में बनवाया गया था।

**दक्षिणी दिशा में स्थित बुंगे :**

**४८. बुंगा सोल्हां वाला :** यह दो- मंजिला बुंगा १८४२ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था। इस बुंगे में संत निहाल सिंघ कविराज रहते थे।

**४९. बुंगा बुध सिंघ :** यह एक-मंजिला बुंगा १८४७ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था।

**५०. बुंगा सोहियां वाला :** यह दो-मंजिला बुंगा १८६३ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**५१. शहीद बुंगा :** यह दो-मंजिला बुंगा १८२१ बिक्रमी में बाबा दीप सिंघ जी ने बनवाया था।

**५२. बुंगा केसगढ़ियाँ :** यह दो-मंजिला बुंगा १८२२ बिक्रमी को बनवाया गया था।

**५३. बुंगा अनंदपुरियां :** यह दो-मंजिला बुंगा १८२४ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**५४. बुंगा दसौंधा सिंघ सिद्धवां :** यह एक-मंजिला बुंगा १८२४ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था।

**५५. बुंगा झबालियां वाले सरदारां दा :** यह दो-मंजिला बुंगा १८४५ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**५६. बुंगा कालियां वाला :** यह एक-मंजिला बुंगा १८५२ बिक्रमी में बनवाया गया था।

**५७. बुंगा तारा सिंघ गैबा :** यह दो-मंजिला बुंगा १८२२ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था। सरदार तारा सिंह गैबा के वंशजों में से सरदार सिमरजीत सिंघ, अतिरिक्त सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी पंद से सेवानिवृत्त हुए।

**५८. बुंगा तारा सिंघ काहन सिंघ मान :** यह दो मंजिला बुंगा १८२२ बिक्रमी में बनवाया गया था। इस बुंगे में महंत मन्ना सिंघ किसी समय रहा करते थे I

**५९. बुंगा भंगा सिंघ थानेसरी :** यह दो-मंजिला बुंगा १८१९ बिक्रमी में तैयार हुआ था।

**६०. बुंगा मज्जा सिंघ सान्हेवालिया :** यह दो-मंजिला बुंगा १८१३ बिक्रमी में बना था। यह बुंगा बाद में चरागियों के कब्ज़े में रहा।

**६१. बुंगा बघेल सिंघ :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८२१ बिक्रमी में बनवाया गया था। यहाँ दीवाली के समय आतिशबाजी चलाई जाती थी।

**६२. बुंगा मीरां कोटियाँ :** यह एक-मंजिला बुंगा १८४८ बिक्रमी में बनवाया गया था।

**६३. बुंगा शाम सिंघ अटारी :** यह दो-मंजिला बुंगा १८५५ बिक्रमी में बनवाया गया था।

**६४. बुंगा जस्सा सिंघ निरमला :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८२१ बिक्रमी में तैयार करवाया गया था।

**६५. बुंगा लक्खा सिंघ निरमला :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८५१ बिक्रमी में बनवाया गया

**६६. बुंगा चढ़त सिंघ रागी :** यह तीन-मंजिला बुंगा १८५० बिक्रमी में तैयार करवाया गया था।

**६७. बुंगा जोध सिंघ सउड़ियां वाला :** यह दो-

मंजिला बुंगा १८२१ बिक्रमी में बनवाया गया था।

**६८. बुंगा जवाला सिंघ पड़ाणियां :** यह दो-मंजिला बुंगा १८६७ बिक्रमी में बनवाया गया।

**६९. बुंगा कबूले वालिया :** यह एक-मंजिला बुंगा १८३१ बिक्रमी में तैयार करवाया गया।

**७०. बुंगा सरकारी :** यह बुंगा घंटा घर के निकट स्थित था।

'तवारीख दरबार साहिब यानि हरिमंदर वाकया अमृतसर शहर' में बुंगों की संख्या ८६ दी गई है। श्री दरबार साहिब कमेटी की तरफ से १९३०-३१ ई. में प्रकाशित 'रिपोर्ट श्री दरबार साहिब' में बुंगों की संख्या ७१ लिखी गई है, परन्तु अंत में नोट दिया गया है कि वास्तव में बुंगों की पुरानी संख्या ८४ प्रसिद्ध है। समय के चक्कर के साथ कई बुंगे एक-दूसरे में शामिल हो जाने के कारण संख्या कम हो गई है।

जिस समय ये बुंगे बने थे उस समय एक हज़ार ईंटों का दाम दस आने था। मिस्त्री चार आने और मज़दूर की मज़दूरी दो आने थी। चूना, लकड़ी बहुत सस्ती थी।

समय के साथ बुंगों की इमारतें बहुत पुरानी और ख़स्ता हो गईं, तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १९४५ ई. में अनुभव किया कि संगत की सुविधा के लिए अमृत सरोवर की परिक्रमा चौड़ी की जाए और बुंगे नये नमूने के बनाए जाएँ, जिससे श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की शोभा में भी आवश्यक वृद्धि हो। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १९४६ ई. में भारत भर के इमारतों के विशेषज्ञ सिक्ख इंजीनियरों की राय के अनुसार परिक्रमा स्कीम पास कर दी। कुछ बुंगे तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अपनी ही सम्पत्ति थे। शेष बुंगे वालों को योग्य कीमत देकर उनसे बुंगे खरीद लिए गए। ये बुंगे किसी समय सिक्ख सरदारी का प्रतीक थे। अब बुंगों की जगह नयी इमारतों ने ले ली है। ये बुंगे ऐतिहासिक यादगार बन कर रह गए हैं। श्री दरबार साहिब सरोवर की परिक्रमा में ' बुंगा रामगढ़िया' सिंघ सरदारों की समृद्धि का प्रतीक है, जिसका शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संरक्षण किया जा रहा है। 'बुंगा रामगढ़िया' में पड़ी ऐतिहासिक सिल (शिला) और बुंगे पर लगा लाल किले का लाल पत्थर सिंघ सरदारों द्वारा ११ मार्च, १७८३ ई. को दिल्ली फतह कर दिल्ली के लाल किले पर केसरी निशान साहिब झुलाने की याद दिलाता है। सिक्ख पंथ की पुरानी इमारतें सिक्ख पंथ की विरासत हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक खालसाई द्वारा इन्हें संभालने के लिए समय-समय पर योग्य प्रयास किये जाते हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियां अपनी विरासत को देख कर गर्व कर सकें।

# हउमै दीरघ रोगु है . . .

–डॉ. मनजीत कौर*

*पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०३९)*

अर्थात् मानव-शरीर हवा, पानी, अग्नि, धरती तथा आकाश के संयोग से बना है। इसके साथ ही इस शरीर में पाँच मनोभाव भी विद्यमान हैं। अगर इन मनोभावों को सही दिशा-निर्देश न मिले तो ये विकारों का रूप धारण कर लेते हैं। ये जज़बात हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार। मानव जीवन बेशकीमती है तथा इसकी सार्थकता हेतु इन जज़बातों पर नियंत्रण अत्यावश्यक है। अगर समय रहते इनकी लगाम न कसी जाए तो ये भयावह रूप धारण कर अमूल्य मानव जीवन के लिए घातक सिद्ध होते हैं।

आओ! गुरबाणी आशयानुसार आज विचार करते हैं दीरघ (दीर्घ) रोग हउमै अर्थात् अहं, अहंकार, अभिमान की, जिसके बारे में 'आसा की वार' में श्री गुरु अंगद देव जी ने बड़ा सुन्दर उल्लेख किया है :

*हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि॥*
*हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि॥*
*हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ॥*
*हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि॥*
*हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि॥*
*किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि॥*
*नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६६)*

अहंकार को मनुष्य का व्यक्तित्व भी माना गया है। संक्षेप रूप से कहें तो इसी के अन्तर्गत हम कर्म करते हैं। अहंकार द्वारा प्रबल रूप धारण कर लेने से यह विकार का रूप धारण कर लेता है जो कि मनुष्य के बार-बार जन्म-मरण में आने का कारण बनता है।

अहंकार दीर्घ रोग माना गया है परतु इसका इलाज भी बाणी में अन्तर्निहित है अर्थात् जब अहंकार को अपने व्यक्तित्व का आभूषण न मानकर उसे व्यक्तित्व के रोग के रूप में देखने की समझ आ जाए तो यही रोग वास्तव में औषधि बन जाता है। जीव पर यदि प्रभु की कृपा हो जाए तो वह शब्द-गुरु के अनुरूप अपना आचरण बना लेता है।

श्री गुरु अंगद देव जी अहं रोग को दीर्घ रोग

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

मानते हैं लेकिन यह भी स्पष्ट करते हैं कि बेशक यह दीर्घ रोग है परन्तु लाइलाज नहीं है। यहाँ इस तथ्य को समझना भी जरूरी है कि इस रोग का इलाज किसी भी दुनियावी वैद्य, हकीम अथवा डॉक्टर के पास नहीं है, अपितु *"दारू भी इसु माहि"* से अभिप्राय है कि इस रोग का इलाज भी गुरबाणी द्वारा हो सकेगा अर्थात् जब ईश्वर की कृपा से पूर्ण गुरु मिल जाए तब गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर ही इस रोग से मुक्ति संभव है।

इस रोग के संदर्भ में श्री गुरु रामदास जी ने अहंकार की तुलना कांटे से करते हुए समझाया है कि जिस प्रकार पैर में लगा हुआ कांटा दुखदायी है जो चलने पर असहनीय पीड़ा देता है, ठीक उसी प्रकार अहंकारी लोग ईश्वरीय प्रेम-रस से विहीन जैसे-जैसे सांसारिक कार्य-व्यवहार में लीन होते हैं, यह अहं का काँटा और अधिक चुभना शुरू हो जाता है। वे सदा दुख पाते हैं और अपने सिर पर सदा यमदंड को झेलते हैं :

*साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे॥*
*जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३)*

अहंकारी मनुष्य ज्यों-ज्यों अहंकार के सहारे जीवन-मार्ग में चलने की कोशिश करते हैं यह पीड़ा असहनीय होती जाती है, जैसा कि पावन बाणी में अन्यत्र भी समझाया है :

*जब लगु मेरी मेरी करै॥*
*तब लगु काजु एकु नही सरै॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६०)*

अहंकारी मनुष्य की फितरत कैसी होती है, पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी उसकी तस्वीर स्पष्ट करते हुए पावन फरमान करते हैं :

*हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी॥२॥*
*जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २४२)*

अर्थात् अहंकारी व्यक्ति कहता है कि मैं ही प्रधान शूरवीर हूँ। मेरे समान और कोई अन्य नहीं है। मैं ही जवान, अच्छे आचरण वाला कुलीन व्यक्ति हूँ।

वास्तव में अहंकारी व्यक्ति के चित्त में ही नहीं आता कि जिन चीजों का उसे अहंकार है उन्हें खाक में मिलते देर ही नहीं लगती :

*जे को बहुतु करे अहंकारु॥*
*ओहु खिन महि रुलता खाकू नालि॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८६८)*

अब विचारणीय पहलू है कि अहंकार मनुष्य सदैव गुणों पर ही करेगा, अवगुणों का कैसा गुमान? जिसकी कोई बात ही न पूछता हो उसको कैसा अहंकार? हां, इसके विपरीत जिसकी जी-हजूरी करने वाले ज्यादा हों उसे तो अहंकार होगा ही। श्री गुरु नानक देव जी इस संदर्भ में अकाल

पुरख वाहिगुरु की बख्शिश को सर्वोपरि मानते हुए उसके समक्ष समस्त प्राप्तियों को तुच्छ बताते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अहंकार त्याग कर अपने अन्त:करण में झांकने को प्रेरित करते हुए जपु जी साहिब में फरमान करते हैं :

*जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ॥*
*नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ॥*
*चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ॥*
*जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २)*

श्री गुरु नानक पातशाह के चिन्तनानुसार अगर किसी इंसान की आयु चार युगों जितनी हो, इतना ही नहीं, इससे भी दस गुणा अधिक हो तथा सारे संसार में वह विख्यात हो जाए, हर व्यक्ति उसकी जी-हजूरी करता हुआ उसका अनुसरण करता हो, नौ खण्डों में भी वो जाना जाए, लेकिन ऐसा व्यक्ति अगर ईश्वर की रहमत (कृपा-दृष्टि ) से वंचित हो, तो ऐसे व्यक्ति की प्रभु-दर पर कोई कद्र नहीं अर्थात् प्रभु-दर पर दुनियावी प्राप्तियों के कारण कोई बात नहीं पूछता।

विनम्रता का आशय यह नहीं कि हम स्वाभिमान के बिना जीना ही छोड़ दें जबकि अभिमान को छोड़ने की अपील सर्वत्र की गई है। एक कहावत है :

*झुक जाते हैं वो जिनमें जान होती है।*
*अकड़ जाना तो मुर्दे की पहचान होती है।*

काश! हमारे दिल-दिमाग में बस जाए गुरबाणी में आया यह फरमान :

*जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार॥*
*अहंबुधि बंधन परे नानक नाम छुटार॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २५५)*

अर्थात् अपनी ताकत के बल पर अत्याचार करके विकारों से भरी हुई यह कच्ची देह बहुत फलती-फूलती है। यह अपने अभिमान के बंधनों में ही जकड़ी जाती है और केवल प्रभु-नाम से ही इसका छुटकारा सम्भव है।

यही नहीं, गुरबाणी में तो यहाँ तक समझाया गया है कि सतिसंगत में आकर जिसने अहंकार को मार लिया है उसे ही प्रभु का नाकिट्य नसीब होता है :

*साधसंगि जिह हउमै मारी॥*
*नानक ता कउ मिले मुरारी॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २५५)*

अहंकारवश इंसान सोचता है कि मेरी योग्यता ज्यादा है और मुझे मिला कम है। परिवार, समाज, देश-दुनिया के झगड़ों का अधिकतर कारण यही प्रतीत होता है। गुरु-कृपा से सोच में थोड़ी तबदीली आ जाए और इंसान यह सोचने लगे कि मेरी योग्यता कुछ भी नहीं, ईश्वर ने तरस करके बहुत अधिक दिया है, मेरी योग्यता से कई गुणा ज्यादा। जैसे ही ईश्वरीय कृपा होगी, हृदय शुक्राने से भर जाएगा। उसी

पल परेशान मन शीतलता और सकून से भर जाएगा। इस संदर्भ में गुरु पंचम पातशाह की बाणी पुख्ता प्रमाण प्रस्तुत करती है :

*तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई॥*
*मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई॥*
*तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ॥*
*नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना का पुनीत कार्य सम्पूर्ण होने पर श्री गुरु अरजन देव जी परमेश्वर का शुक्राना करते हुए इस महान कार्य का सम्पूर्ण श्रेय अकाल पुरख वाहिगुरु को देते हुए इतनी विनम्रता से अर्ज कर रहे थे कि "हे ईश्वर! मेरे में कोई बल नहीं था। यह कार्य तेरी रहमत से सम्पूर्ण हुआ है। मैं तेरे इस महान परोपकार को बयान नहीं कर सकता। तेरी ही कृपा से मुझे सतिगुरु सज्जन पुरुष का मिलाप नसीब हुआ है। तेरे चरणों में यही अरदास है कि मुझे हर पल तेरे नाम का आश्रय और प्यार मिलता रहे, जिसके फलस्वरूप मैं तन-मन से सदैव आनन्दित रहूँ।

गुरबाणी से हमें यही दिशा-निर्देश मिलता है कि बेशक जीव के पास जितनी भी धन-सम्पदा, गुण, विद्या, वैभव, रूप-रंग, प्रतिभा आदि हो, आखिर है तो ईश्वर का ही दिया हुआ। ऐसे में अभिमान कैसा? गुरबाणी इस संदर्भ में हमारा मार्गदर्शन करती है कि अहंकार और प्रभु का नाम एक स्थान पर नहीं रह सकते और न ही अहंकारी व्यक्ति सेवाभावी हो सकता है :

*हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ॥*
*हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५६०)*

जीव अहंकार में बंधा हुआ है। इसी कारण इसके मन में नाम का निवास नहीं हो पाता। इस संदर्भ में श्री गुरु अमरदास जी का पावन संदेश है कि जब सच्चा गुरु मिलता है तभी अहंकार छूटता है और मन में सत्य का निवास होता है :

*हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ॥३॥*
*नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५६०)*

इस प्रकार अनेक उदाहरण गुरबाणी में हमें मिलते हैं जहाँ अहंकार को त्याग कर हृदय में विनम्रता धारण करने की प्रेरणा दी गई है। वैसे भी इंसान की बुद्धि ससीम है और ईश्वर असीम, अनंत-बेअंत है। उसे ससीम बुद्धि से कैसे जाना जा सकता है? इस संदर्भ में एक यूनानी चिंतक की गाथा है जो आपके साथ साझा करना चाहूंगी :—

यूनान का एक चिंतक था, जिनका नाम था ऑगस्टिन्स। एक सुबह वह सागर के किनारे पर

घूमने हेतु निकल पड़ा। सत्य की खोज में मानों सारा सुख-चैन ही खो बैठा हो। कई रातों से सो नहीं पाया था, इसी कारण उसकी आँखें थकी हुई-सी थीं। ईश्वर को पाने का विचार उसे बेचैन किए हुए था। शायद ईश्वर-प्राप्ति का कोई संकेत सागर के किनारे पर मिले, ऐसा सोच ही रहा था कि सागर के किनारे पर खड़े एक बालक को उसने देखा जो हाथ में प्याली लिए किसी गहरी चिन्ता में डूबा था। ऑगस्टिन्स ने पूछा— "बेटा! तुम यहाँ क्या कर रहे हो और किस चिन्ता में डूबे हो?" बालक ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा और वही प्रश्न दोहराया कि "चिन्ता में तो आप भी मुझे दिखाई दे रहे हो, इसलिए पहले आप अपनी चिंता का कारण बताएं! हो सकता है, जो मेरी चिन्ता है वही आपकी भी हो। लेकिन, आपकी प्याली कहाँ है?" उसे कुछ समझ में नहीं आया। मुस्कराते हुए बोला— "मैं सत्य की खोज में हूँ और उसी के कारण चिन्तित हूँ।" बालक बोला, "मेरी चिन्ता का कारण यह है कि मैं इस प्याली में सागर को भरना चाहता हूँ, लेकिन सागर है कि मेरी प्याली में आ ही नहीं रहा।" बालक के मुख से यह बात सुन कर उस चिंतक को पहली बार अपनी बुद्धि की प्याली का आकार दिखाई दिया और सत्य के सागर की विशालता भी। वो बोला, "सचुमच हम दोनों ही बालक हैं।" ऑगस्टिन्स सोचने लगा कि वास्तव में संसार के सभी लोग बालक हैं और किसी न किसी सागर के किनारे पर अपनी-अपनी प्यालियां लिए खड़े हैं। उन सबको यही मलाल है कि उनकी प्यालियों में सागर समा क्यों नहीं रहा है? कोई-कोई तो यह भी सोचने लगता है कि उसकी प्याली बड़ी है। अब उन्हें कौन समझाए कि प्याली जितनी बड़ी होगी, सागर के उसमें समाने की संभावना उतनी ही कम होगी, क्योंकि बड़ी प्याली का अहंकार भी उतना ही बड़ा होगा।

गुरबाणी आशयानुसार वही शूरवीर है जिसने अहंकार के प्रबल रूप को अपने अंदर से मार दिया है और ऐसे व्यक्ति ने ही गुरमुख बन कर प्रभु-नाम का गुणानुवाद करके जन्म संवार लिया है। वह स्वयं तो मुक्त हुआ ही है साथ ही साथ उसने अपने कुल का भी उद्धार कर लिया है :

*नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ॥*
*गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ॥*
*आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८६)*

खबरनामा

## शताब्दियों से संबंधित विज्ञापन में श्री हरिमंदर साहिब की तसवीर के साथ छेड़छाड़

## सिक्ख भावनाओं से खिलवाड़ : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २४ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पंजाब सरकार द्वारा शताब्दियों के संबंध में सुझाव प्राप्त करने के लिए जारी किए गए विज्ञापन में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की तसवीर को कंप्यूटर तकनीक द्वारा बिगाड़े जाने की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि सरकार की यह हरकत सिक्ख भावनाओं के साथ बड़ा खिलवाड़ है। उन्होंने कहा कि सिक्ख धर्म से संबंधित कोई भी तसवीर छापने से पहले सरकार को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से संपर्क अवश्य करना चाहिए था।

एडवोकेट धामी ने कहा कि श्री हरिमंदर साहिब सिक्खों की आस्था का केंद्र है और विश्व भर के सिक्ख इस पावन स्थल के स्वरूप को अपने मन में बसाए रखते हैं। एआई तकनीक द्वारा बनाई गई गलत तसवीर में न केवल सिक्खों की श्रद्धा और आस्था के साथ खिलवाड़ किया गया है, बल्कि सिक्खों की आत्मा में रचे-बसे श्री हरिमंदर साहिब की रूहानी आभा को भी धूमिल करने की एक घिनौनी हरकत की गई है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने कहा कि इंटरनेट पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की सैकड़ों वास्तविक तसवीरें उपलब्ध होने के बावजूद कंप्यूटर द्वारा छेड़छाड़ करके इसे बिगाड़ना बेहद दुखदायी है। सरकार को इस पर स्पष्ट करना चाहिए और तुरंत माफ़ी माँगनी चाहिए।

एडवोकेट धामी ने कहा कि शताब्दियों से संबंधित आयोजन करना सिक्ख संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की जिम्मेदारी है, जबकि सरकार का कर्त्तव्य है कि गुरु साहिबान से संबंधित नगरों का विकास करे, सड़कीय ढांचे को बेहतर बनाए और सिक्ख संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के साथ विचार-विमर्श कर उपयुक्त स्मारक स्थापित करे।

## शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने धार्मिक परीक्षा के दर्जा तृतीय व चतुर्थ और

## सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स का परिणाम किया घोषित

श्री अमृतसर साहिब : २५ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा आयोजित वार्षिक धार्मिक परीक्षा के दर्जा तृतीय व चतुर्थ और सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स का परिणाम मुख्य सचिव सरदार कुलवंत सिंघ मंनण, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता और सचिव सरदार प्रताप सिंघ द्वारा घोषित किया गया। इससे पहले दर्जा व और द्वितीय के परिणाम घोषित किए जा चुके हैं।

इस संबंध में जानकारी देते हुए मुख्य सचिव सरदार कुलवंत सिंघ मंनण ने बताया कि फरवरी २०२५ में ली गई दर्जा तृतीय व चतुर्थ की धार्मिक परीक्षा में कुल ५६९६ विद्यार्थियों ने भाग लिया था,

जिनमें से १३० विद्यार्थियों को वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) प्राप्त हुआ है। मेरिट सूची में आए परीक्षार्थियों को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की ओर से ४ लाख १५ हज़ार रुपये की छात्रवृत्ति राशि दी जाएगी।

इसके अलावा प्रथम तीन स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को क्रमश: ५१००, ४१०० और ३१०० रुपये की विशेष पुरस्कार राशि भी दी जाएगी तथा उत्तीर्ण होने वाले सभी विद्यार्थियों को मेडल और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

उन्होंने यह भी बताया कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स के सत्र २०२३-२५के द्वितीय वर्ष और सत्र २०२४-२६ के प्रथम वर्ष का परिणाम भी घोषित किया गया है, जिसमें मेरिट सूची में आए ३० विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति राशि दी जाएगी।

सरदार मंनण ने बताया कि स्कूलों एवं कॉलेजों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को सिक्ख धर्म के सिद्धांतों, गुरबाणी, रहित मर्यादा और इतिहास के संग जोड़ने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी लगातार सक्रिय भूमिका में है। इसी उद्देश्य के तहत यह धार्मिक परीक्षा आयोजित की जाती है और हर वर्ष लाखों रुपये की छात्रवृत्ति दी जाती है। इसके अलावा पत्राचार कोर्स के माध्यम से आम श्रद्धालुओं को भी सिक्ख धर्म की जानकारी देने हेतु कोर्स करवाया जाता है। उन्होंने संगत और सिक्ख युवाओं से अपील की कि वे इन धार्मिक परीक्षाओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें ताकि सिक्ख इतिहास और सिक्ख सभ्याचारक विरासत के साथ जुड़ा जा सके।

उल्लेखनीय है कि धार्मिक परीक्षा के दर्जा तृतीय में पहला स्थान जगमीत सिंघ और मनजीत कौर ने प्राप्त किया, जबकि दूसरा स्थान फिलिप्स और तीसरा स्थान हरपाल सिंघ को मिला।

इसी प्रकार, दर्जा चतुर्थ की परीक्षा में पहला स्थान सरबजीत कौर, दूसरा स्थान मनदीप कौर और अमनदीप कौर तथा तीसरा स्थान शुभप्रीत कौर एवं रमनदीप कौर ने प्राप्त किया।

सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स के परिणामों में पहला स्थान बलजिंदर सिंघ, दूसरा स्थान हिम्मत सिंघ और तीसरा स्थान श्रद्धा कौर ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, सचिव सरदार प्रताप सिंघ, अतिरिक्त सचिव सरदार बिजै सिंघ, इंचार्ज डॉ. रणजीत कौर पंनवा, सुपरवाइज़र सरदार जसबीर सिंघ आदि उपस्थित थे।

## श्री दरबार साहिब के निकट हुई बेअदबी की घटना पर एडवोकेट धामी ने लिया गंभीर नोटिस

श्री अमृतसर साहिब : ३ जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने श्री दरबार साहिब के निकट गुटका साहिब की बेअदबी की घटना की कड़े शब्दों में निंदा की है। इस घटना को सिक्ख कौम की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली और अत्यंत निंदनीय बताते हुए

एडवोकेट धामी ने दोषी व्यक्ति के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई करने और उल्लेखनीय सज़ा देने की माँग की है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि गुरबाणी सिक्ख कौम की आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत है। गुरबाणी की बेअदबी जैसी घटनाएँ सिक्ख संगत की भावनाओं को गहरी चोट पहुँचाती हैं। उन्होंने कहा कि ज़रूरी है कि इस घटना के पीछे जो मुख्य दोषी या साज़िशकर्ता हैं, उन्हें भी सामने लाया जाए। बार-बार बेअदबी की घटनाओं के बाद सरकार द्वारा दोषियों को मानसिक रोगी करार देना भी एक बड़ी साज़िश प्रतीत होता है।

उन्होंने पुलिस प्रशासन से ज़ोर देकर कहा कि इस मामले की गहराई से जाँच की जाए और सभी संभावित पहलुओं को ध्यान में रखते हुए सच्चाई को सामने लाया जाए।

एडवोकेट धामी ने कहा कि जून महीने का पहला सप्ताह सिक्ख कौम के लिए ऐतिहासिक और भावनात्मक रूप से अत्यंत संवेदनशील होता है, क्योंकि यह समय श्री दरबार साहिब पर सन् १९८४ में हुए फौजी हमले की याद को ताज़ा कराता है। ऐसे समय में गुटका साहिब की बेअदबी जैसी घटना का होना सिक्ख कौम के ज़ख्मों को और गहरा करता है तथा संगत में आक्रोश की भावना को बढ़ाता है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने यह भी कहा कि सरकार ऐसे दोषियों के लिए मौत की सज़ा का प्रावधान करे ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

बताया जा रहा है कि पिछली रात करीब १०:३० बजे के आस-पास एक व्यक्ति द्वारा श्री दरबार साहिब के निकट गुरबाणी के पावन गुटका साहिब के अंग फाड़कर बेअदबी की गई। मौके पर पकड़े गए आरोपी की पहचान गुरप्रीत सिंघ के रूप में हुई है, जो श्री अमृतसर साहिब का ही निवासी है। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने आवश्यक कानूनी कार्रवाई के लिए पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई है।

## श्री अकाल तख़्त साहिब पर जून १९८४ ई. के शहीदों की याद में आयोजित हुआ शहीदी समारोह

श्री अमृतसर साहिब : ६ जून : जून १९८४ ई. में भारत की तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर किए गए फौजी हमले के दौरान शहीद हुए बाबा जरनैल सिंघ खालसा भिंडरांवाले, भाई अमरीक सिंघ, बाबा थारा सिंघ और जनरल शुबेग सिंघ सहित सभी शहीदों की याद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा वार्षिक शहीदी समारोह आयोजित किया गया।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए इस समागम के अवसर पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार और श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज, दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा, बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा

बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, बाबा निहाल सिंघ तरना दल हरियांवेलां, दल बाबा बिधीचंद सम्प्रदाय के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, बाबा जोगा सिंघ तरना दल बाबा बकाला, पूर्व जत्थेदार भाई जसबीर सिंघ खालसा सहित कई पंथक शख्सियतों ने शिरकत की।

इस अवसर पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के उपरांत हजूरी रागी जत्थे द्वारा गुरबाणी-कीर्तन किया गया और अरदास श्री अकाल तख्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज द्वारा की गई। संगत को पावन हुकमनामा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी रघबीर सिंघ ने सुनाया।

इस अवसर पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बाबा जरनैल सिंघ खालसा भिंडरांवाले के सुपुत्र भाई ईशर सिंघ, शहीद भाई अमरीक सिंघ की सुपुत्री बीबी सतवंत कौर, भाई मनजीत सिंघ भूराकोहना, शहीद भाई नछत्तर सिंघ पहिलवान के सुपुत्र भाई भुपिंदर सिंघ पहिलवान, जनरल शुबेग सिंघ के भाई सरदार बेअंत सिंघ सहित शहीदों के पारिवारिक सदस्यों को गुरु की बख्शिश स्वरूप सिरोपाओ देकर सम्मानित किया गया।

**जून १९८४ ई. का घल्लूघारा सिक्ख कौम कभी नहीं भूलेगी : एडवोकेट धामी**

जून १९८४ ई. के घल्लूघारे की वार्षिक बरसी पर उपस्थित शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार द्वारा जून १९८४ ई. में सिक्ख कौम पर किया गया अत्याचार कभी नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने कहा कि जब तक दुनिया है, कांग्रेस द्वारा सिक्खों पर किए गए जुल्मों को याद किया जाता रहेगा। हर साल जून माह में सिक्ख कौम की भावनाएं गहरे दुख एवं वेदना से गुजरती हैं और हर संवेदनशील व्यक्ति सरकार की इस घटिया हरकत की निंदा करता है। उन्होंने घल्लूघारे के सभी शहीदों को कौम के जुझारू नायक करार देते हुए सिक्ख कौम की चढ़दी कला (उन्नति) के लिए अरदास की।

एडवोकेट धामी ने कहा कि जून का यह सप्ताह सरकारों द्वारा सिक्खों के साथ की गई बेगानगी का एहसास कराता है। आज भी अनेक मामले सरकारों के पास लंबित हैं, जिन पर सरकारों का रवैया निराशाजनक रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष २०१९ में श्री गुरु नानक देव जी के ५५०वें प्रकाश पर्व के अवसर पर भारत सरकार ने बंदी सिंघों की रिहाई और भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की सजा में परिवर्तन किए जाने की घोषणा की थी, लेकिन सरकार ने इस पर अमल नहीं किया।

उन्होंने कहा कि आज भी सिक्खों की ताकत को विखंडित करने के प्रयास जारी हैं, जिसके तहत शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को अलग किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के चुनाव के समय जिस प्रकार दखलअंदाज़ी की गई, वह सबके सामने है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने सिक्ख मसलों के समाधान के लिए कौम को एकजुट होने की अपील की। साथ ही शहीदी समारोह में उपस्थित सिंघ साहिबान, दमदमी टकसाल, निहंग सिंघ दलों, सिक्ख संप्रदायों, सिक्ख जत्थेबंदियों और संगत का धन्यवाद किया।

# दाख़िला सूचना

## पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्टडीज़ इन सिक्खिज़म बहादरगढ़ ( पटियाला )

## गुरमुखी टीचिंग ट्रेनिंग के लिए त्रैवार्षिक डिग्री कोर्स

# बैचलर ऑफ आर्ट्स इन गुरमुखी एजूकेशन

## BACHELOR OF ARTS IN GURMUKHI EDUCATION

( श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतहिगढ़ साहिब )

लड़के तथा लड़कियों के लिए

### योग्यता

- शैक्षिक योग्यता 12वीं कक्षा ( कोई भी ग्रुप ) उत्तीर्ण हो तथा गुरसिक्ख होना लाज़मी है।
- 12वीं कक्षा के परिणाम के लिए प्रतीक्षारत उम्मीदवार भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु-सीमा अधिक से अधिक २२ वर्ष हो।
- **किसी भी विषय-समूह (Any stream) में कम से कम 45% अंकों के साथ 12वीं कक्षा पास हो।**

### भविष्य

- कोर्स के पश्चात् विद्यार्थी यूनिवर्सिटी नियमों के अनुसार ई.टी.टी., बी.एड. और धर्म, इतिहास, पंजाबी, एजूकेशन आदि विषयों में एम.ए. कर सकते हैं।
- सरकारी और ग़ैर-सरकारी अदारों में स्नातक स्तर की असामियों के लिए योग्य।
- शिक्षार्थी, सिक्ख/पंजाबी शैक्षिक अदारों, गुरुद्वारा साहिबान और धार्मिक/समाजसेवी संस्थायों में गुरमुखी अध्यापक के तौर पर सेवा निभाने के योग्य होंगे।

### सुविधाएं

- रिहायश के लिए निःशुल्क छात्रावास के अलावा हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल और पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास-रूम और कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में नौकरी के वक्त प्राथमिकता।
- धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से भोजन (लंगर) आदि के ख़र्च के लिए १५००/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा।

दाख़िले सम्बंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

**97810-10888, 90416-20861, 75270-56756**

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

**1500/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा की सुविधा**

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

हरजिंदर सिंघ एडवोकेट
प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

# GURMAT GYAN

July 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

## शहीद भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतारे जाने का दृश्य

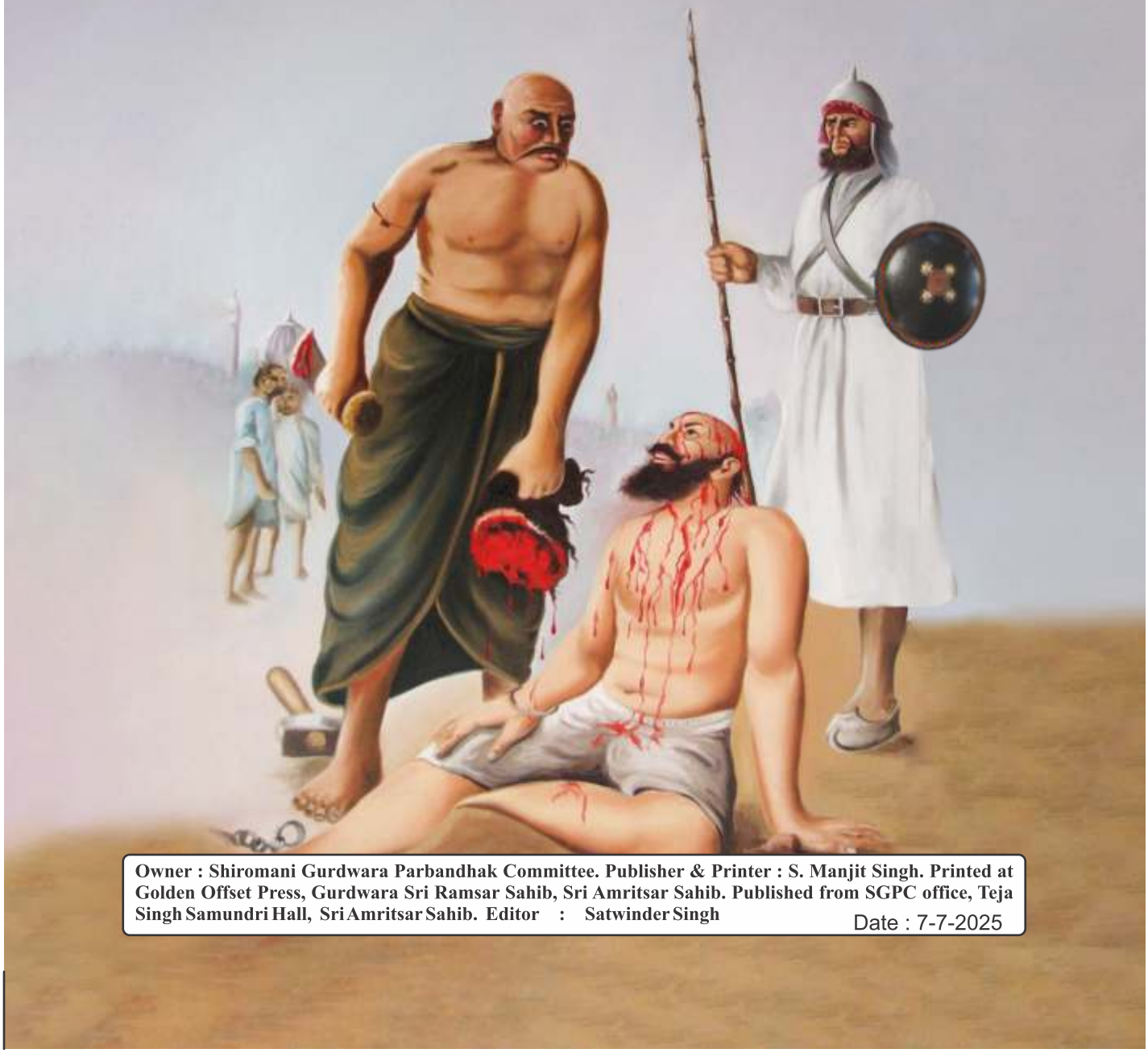

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-7-2025